तृतीय अध्याय

विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी पात्र आदर्शवाद के परिप्रेक्ष्य में

भूमिका :

प्रकृति और मनुष्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। मनुष्य प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ वरदान है। मनुष्य जितना संवेदनशील प्राणी है उतना ही वह बुद्धिजीवी और सौंदर्य पिपासु प्राणी है। मनुष्य की ये प्रवृत्तियाँ उसके साहित्य में किसी न किसी रूप में अभिव्यक्त होती है। साहित्यकार साहित्य का सृष्टा है और इसलिए प्रथमत: साहित्य का सृजन होता है। और बाद में उसकी समीक्षा समीक्षक करते हैं। अपनी समीक्षा के माध्यम से समीक्षक कुछ ऐसे सवाल उठाते है कि जिसकी वजह से वादों का निर्माण होता है। साहित्य में प्रयुक्त आदर्शवाद, यथार्थवाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, प्राकृतवाद, मानवतावाद, अस्तीत्ववाद आदि समीक्षकों के मस्तिष्क की ही उपज है। कभी कभी समीक्षक विभिन्न वादों के परिप्रेक्ष्य में किसी साहित्यकार का मूल्यांकन करने का प्रयास, उसके साहित्य में अभिव्यक्त विचार, दर्शन आदि को ध्यान में रखकर करता है। डॉ. प्रेमनारायण शुक्ल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक " हिन्दी साहित्य में विविध वाद " में लिखा है कि, " इतना निश्चित है कि वाद पहले उत्पन्न नहीं हुए। कवि पहले उत्पन्न होते हैं, आलोचक पीछे। आलोचक कवि की वृत्ति का निर्धारण करके उसे एक " वाद " का नाम देते हैं। "[1] कभी कभी एक साहित्यकार के साहित्य में अनेक वादों के दर्शन भी होते हैं।

विष्णु प्रभाकर के साहित्य का विशेषत: उनके नाटकों का अनुशीलन करने से यह दिखायी पड़ता है कि उनके साहित्य में आदर्शवाद और यथार्थवाद का मणीकांचन संयोग दृष्टिगोचर होता है। उनके नाटकों के नारी पात्रों को इस कसौटीपर परखा जा सकता है।

साहित्य में आदर्शवाद :

हिन्दी में आदर्शवाद अंग्रेजी भाषा के शब्द " आइडिआलिज्म " (idealism) के पर्याय रूप में प्रयुक्त किया जाता है। किन्तु वास्तव में " आइडिआलिज्म " का अर्थ आदर्शवाद मात्र नहीं है। यह शब्द " आइडिया " (idea) से सम्बन्धित है। जिसका मूल अर्थ है विचार। इस कारण आदर्शवाद किसी सीमा

तक विचारवाद भी है। मानव के आदर्शवादी विचारों के परिणाम स्वरूप ही साहित्य में आदर्शवाद का प्रवर्तन हुआ। जो लोग साहित्य का सम्बन्ध धर्म और सदाचार से स्थापित करते हैं आदर्शवाद उन्हीं की देन है। आदर्शवाद का प्रयोग अनेक रूपों में किया जाता है। दर्शन, राजनीति, साहित्य और कला के क्षेत्र में आदर्शवाद की विस्तृत विवेचना प्राप्त होती है। " आदर्शवाद एक प्रकार का दृष्टिकोण है, जिसकी सहायता से संसार का मूल्यांकन किया जाता है। वह एक विचार प्रणाली है। यथार्थ के जो मूल तत्व होते हैं, उनके अतिरीक्त भी कोई चेतन सत्ता है, विचारणा है, इसी आधार पर आदर्शवाद अपने चिन्तन में अग्रेसर होता है। "[2] आदर्शवाद की दृष्टि बौद्धिक है किन्तु वह जीवन के सूक्ष्मतर मूल्यों को अधिक महत्व देता है और इस दृष्टि से वह आध्यात्मिक है। भारत सदा से ही आचार प्रवण और धर्म प्रधान देश रहा है इसलिए उनकी सामान्य प्रवृत्ति आदर्शवाद की ही रहीं। साहित्य में आदर्श शब्द का प्रयोग दर्शन अथवा राजनीति की भाँति किसी रूढ़िगत अर्थ में नहीं किया जाता। साहित्य का आदर्शवाद मानव जीवन के आन्तरिक पक्षपर जोर देता है। जीवन के दो पक्ष है 1) आन्तरिक और 2) बाह्य। आन्तरिक पक्ष में मानसिक सुख, प्रसन्नता परितोष और आनन्द आ जाते हैं। बाह्य पक्ष में ऐश्वर्य, वैभव तथा भौतिक उन्नति का स्थान है। आदर्शवादी साहित्यकार का पूरा विश्वास एवं यकीन है कि मनुष्य जब तक आन्तरिक सुख प्राप्त नहीं करता उसे वास्तविक आनन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती। जब तक मानव शाश्वत, चिरंतन सत्य अथवा आनन्द प्राप्त नहीं कर लेता तब तक उसकी चेतना भटकती रहेगी। आदर्शवाद मानव जीवन की आन्तरिक व्याख्या करता है। वह उस मानव मूल्यों को ग्रहण करता है जो कल्याणकारी है, शुभ है, सृजनात्मक है। भारतीय साहित्य शास्त्र में " रस " की जो महत्ता है वह जीवन के आन्तरिक परितोष या आनन्द का ही दूसरा रूप है। इसी दृष्टि से संस्कृत में सुखात्त नाटकों की अधिक सृष्टि की गयी। महाकाव्य के नायक का धीरोदात्त होना जरूरी माना गया। इस जीवन दृष्टि की वजह से ही " रामायण " और " महाभारत " में देवत्व की दानवत्वपर विजय घोषित की गयी। आदर्शवादी साहित्यकार भाव और कला की महत्तर ऊँचाईपर जाने की कोशिश करता है। अर्न्तमुखी होने के कारण कभी-कभी उसकी चेतना आध्यात्मिक यहाँ तक की रहस्यवादी हो जाती है। चिरन्तन मानव मूल्यों को महत्व देने के कारण लगभग हर इक महान साहित्यकार किसी सीमा तक आदर्शवादी होता है। क्योंकि महान साहित्य सृजन के लिए शाश्वत मानव मूल्यों के ग्रहण के साथ मानव की उच्चतम सम्भावनाओं का प्रकाशन जरूरी है। आदर्शकाव्य में आनन्द और उपदेश का सुन्दर समन्वय होता है। हमारे आचार्यों ने काव्य के प्रयोजनो में " कान्तासम्मित उपदेश " का भी उल्लेख दिया है। साहित्य में उपदेशात्मकता आते ही उसकी प्रवृत्ति आदर्शवाद की ओर हो जाती है। इसलिए हमारे यहाँ आदर्शवाद का प्रचार बड़ी मात्रा में हुआ। भावना और शिल्प के आधारपर साहित्य में आदर्शवाद के दो पक्ष होते हैं।

भावक्षेत्र का आदर्शवाद साहित्यकार को जीवन की महत, चिरन्तन सम्भावनाओं की ओर ले जाता है। इस दृष्टि से वाल्मिकी, गटे, टालस्टाय, आदि आदर्शवादी लेखक है। भावक्षेत्र में आदर्शवाद के विभिन्न रूप दिखायी देते हैं। यूरोप के अधिकांश स्वच्छंदतावादी (Romantic) लेखक आदर्शवादी ही कहे जायेंगे।

हिन्दी साहित्य का अधिकांश आरंभिक स्वरूप आदर्शवादी है। वीरगाथा काल में जो साहित्य सृष्टि हुयी इसमें यथार्थ का अंश है। क्योंकि वह स्तुति और अभ्यर्थता की भावना से प्रेरित है। भक्तिकाल का अधिकांश काव्य आदर्शवादी कहा जाएगा। क्योंकि इसमें आध्यात्मिकता का पुट है। गोस्वामी तुलसीदास जी का आदर्शवाद मर्यादासमन्वित आदर्शवाद है। कृष्ण कवि सूरदास का आदर्शवाद अपेक्षाकृत अधिक स्वच्छंद प्रकृति का है। कबीर साहित्य यथार्थ से अनुप्रणित है फिर भी उनकी दृष्टि आदर्शवादी रही। रीतिकाल में आकर आदर्शवाद का स्वरूप छिन्न भिन्न हो गया। छायावाद की जीवनदृष्टि आदर्शवाहिनी है। अध्यात्म की अपेक्षा सौन्दर्य, दर्शन, राष्ट्रीयता के तत्व मुखर हुये हैं। जयशंकर प्रसाद में छायावादी आदर्श भावना का चरमोत्कर्ष है। " सामान्य शब्द प्रयोग के अनुसार आदर्शवादी नहीं है जा उच्च भौतिक आध्यात्मिक और सौंदर्य परक प्रतिमानों आदर्शों को स्वीकार करके अपने तथा समाज के जीवन को उनके अनुसार ढालने का प्रयास करें। "[3] "

" आदर्शवाद व्यक्ति विशेष को लेकर उसके गुणों की ओर हमें खींचता है और उसके चरित्रों का अनुकरण सांसारिक समस्याओं के समाधान के लिए उपयुक्त समझता है। "[4] प्रेमचन्दों के उपन्यासों में यथार्थ का चित्रण है किन्तु उनकी जीवनदृष्टि आदर्शवादी है। समीक्षा क्षेत्र में प्रा. रामचंद्र शुक्ल, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, नन्ददुलारे वाजपेयी ने साहित्य की आदर्शवादी प्रवृत्तिपर जोर दिया। वह व्यक्ति भी आदर्शवादी कहलाता है जो किसी समाज समुदाय या वर्गविशेष की प्रस्तुत दशा से असन्तुष्ट होकर उसके लिए किसी नये आदर्श की स्थापना करता है। नैतिक आदर्शवाद ने मनुष्य के जीवनपर व्यापक प्रभाव डाला है। वस्तुतः वह किसी भी संस्कृति की आत्मा है। वाल्मिकी रामायण, महाभारत, रामचरितमानस, प्लेटो की रिपब्लिक वाक्विल, जैसी कृतियाँ महान नैतिक आदर्शवाद की स्थापना करती है। भारतीय कलाओं का मूल स्रोत आदर्शवाद ही रहा है। गोविन्द त्रिगुणायत कहते हैं, " पाश्चात्य साहित्य में भी आदर्शवाद के दर्शन होते हैं। प्रारंभ में इसमें उस के कहीं कहीं धार्मिक आदर्शवाद की प्रतिष्ठा दिखलायी पडती है किन्तु परवर्ती साहित्यकार सर्वत्र कलावादी आदर्शवाद की ही झलक मिलेगी। रोमांटिक युग अपने कलावादी आदर्श के लिए लोक प्रसिद्ध है। इसप्रकार हम देखते हैं कि भारतीय साहित्य ही नहीं पाश्चात्य साहित्य भी आदर्शवाद से अनुप्रणित है। "[5]

विष्णु प्रभाकर का नारी विषयक आदर्शवादी दृष्टिकोण

श्री विष्णु प्रभाकर जी मानवतावादी लेखक होने की वजह से सदैव " मनुष्य " विष्णुजी का लक्ष्य रहा है। उनका सारा साहित्य उसी की खोज में आतुर है। साहित्यानुराग ने ही उन्हें नौकरी से बाहर खींचकर स्वतंत्र लेखक के रूप में स्थापित कर दिया है। वे आदर्शवादी साहित्यकार है। साहित्यकार के रूप में वे इस युग के श्रेष्ठ विचारक, चिन्तक एवं समाज सुधारक माने जा सकते हैं। उनको गांधीवाद, दर्शन और राजनीति ने प्रभावित किया था। उनकी रचनाओंपर गांधीवाद की गहरी छाप है। शरन साहित्य का उनपर इतना गहरा प्रभाव था कि विष्णु प्रभाकरजी नारी के प्रति भावुक नजर आते हैं। उनके नाटकों में नारी पात्र की प्रधानता है। नारी के रूप में कल्याण, प्रेम और त्याग की भावना मूर्त हुयी है। उनके नारी पात्रों की विशिष्टता का महत्त्वपूर्ण कारण यह है कि उन्होंने प्रमुख नारी पात्रों को हृदय का प्रतीक माना है। जिस सौंदर्य की स्थापना विष्णु प्रभाकरजी ने अपने आदर्श नारी पात्रों में दी है। नाटककार विष्णु प्रभाकर जी के मन में नारी के प्रति श्रद्धा है। " शरन साहित्य से वे सर्वाधिक प्रभावित रहें हैं। जीवनी लिखते समय वे पूर्ण रूप से शरत्मय हो गये है, ऐसा प्रतीत होना है कि उन्होंने शरत् की अन्तरात्मा को पूर्ण रूप से पहचान लिया था। "[6] नारी मुक्ति के वे समर्थक है। वे प्रारंभ से ही शरत साहित्य से इतने प्रभावित हुए थे कि उसी का असर यह हुआ कि वे नारी के प्रति भावुक नजर आते है। " " कोई तो " उपन्यास के पात्र वर्तिका, असद, प्रभात, लाजवन्ती आदि आदर्श होने के बावजूद भी अनपहचाने नहीं लगते। वस्तुतः समाज इन्हीं के बलकते पर टिका है। वास्तव में ये इन्हें जीते पात्र है और दुश्मन इन्हीं के सामने पराजय को स्वीकार करता है। आत्मपीडा के दुःख को वास्तविक सुख माननेवाले यह पात्र समाज की नींव के पत्थर है।"[7] विष्णु प्रभाकर मानवतावाद के पुजारी है। नाटककार विष्णु प्रभाकर ने " डॉक्टर " नाटक में डॉ. अनीला को बहुत ऊँचा उठाया है। डॉक्टर बनने के बाद भी नारी सुलभ प्रवृत्ति के अनुरूप उसमें भी बदले की भावना भडक उठती है। लेकिन वह सब्र से काम लेती है। अपने डॉक्टरी पेशे के प्रति वह ईमानदार रहती है। अपने कर्तव्य पर विजय प्राप्त करती है। अपने कर्तव्य पर विजय पाना यही उसके स्वभाव की और चरित्र की विशेषता है। यह नाटक आदर्शवादी बन गया है। आदर्शवाद और गांधीवाद के अलावा प्रेमचन्द साहत्य और शरद साहित्य का भी उनपर जबरदस्त प्रभाव रहा। विष्णु प्रभाकर जी पूर्ण सार्थक और प्रासंगिक रचनाकार है। उनके नाटकों में समय भित्ती से चलकर अवकाश भित्ती में जाने की पूरी क्षमता है। वे गांधीवादी विचारधारा के लेखक है, उनकी संवेदना का धरातल संघर्ष का उतना नहीं जितना सामंजस्य का है। विष्णुजी हमेशा नारी स्वातंत्र्य और स्वावलम्बी नारी के समर्थक रहे। वे एक सजग रचनाकार है।

विष्णु प्रभाकर के नाटकों के आदर्शवादी नारी पात्र

विष्णु प्रभाकर मूलत: आदर्शवादी लेखक है। क्या नाटक ? क्या एकांकी ? क्या उपन्यास ? साहित्य के प्रमुख विधाओं में उनका आदर्शवादी दृष्टिकोन सहज रूप में दिखायी पड़ता है। विष्णु प्रभाकर जी के नाटकों में आदर्शवादी नारी पात्रों की विविधता प्रचुर मात्रा में परिलक्षियत होती है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से उनके नाटकों के आदर्शवादी नारी पात्रों को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है।

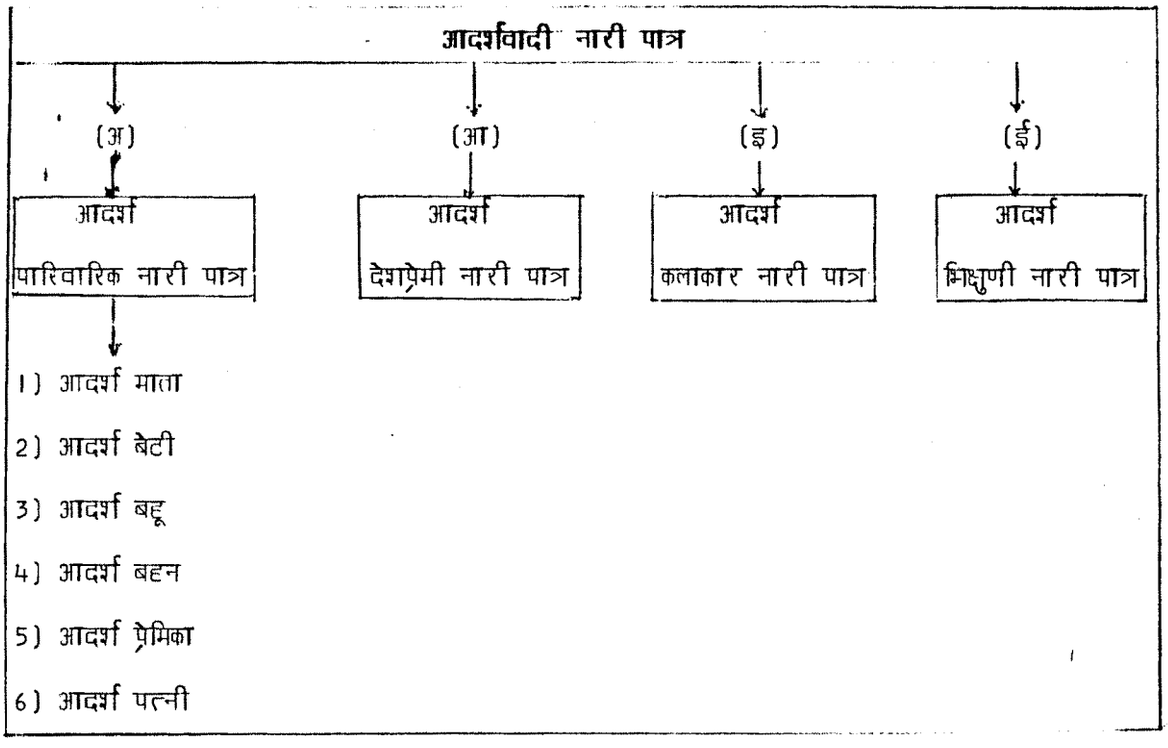

(अ) आदर्श पारिवारिक नारी पात्र

विष्णु प्रभाकर जी अपने नाटकों में पारिवारिक जीवन से अधिक जुड़े दिखायी देते हैं। आदर्श परिवार के परिप्रेक्ष्य में उन्होंने माता, बेटी, बहू, बहन, प्रेमिका और पत्नी को रेखांकित किया है। यहाँ नारी पात्रों का आदर्श व्यापक रूप में प्रस्तुत करके नाटककार ने यह बताया है कि भारतीय नारी मुख्यतया आदर्शवादी नारी ही अधिक है।

1) आदर्श माता

1) सुनन्दा (सत्ता के आर-पार) :

सुनन्दा " सत्ता के आर-पार " पौराणिक नाटक की नारी पात्र है। वह आदर्श माता है। वह पोदनपुर के शक्तिशाली नरेश बाहुबली की वह माँ है। वह ममतामयी, करूणाशील एवं धर्मशील आदर्श नारी

है। वह करूणा की सामान मूर्ति है। वह राजमाता है लेकिन गर्व उसे छूता नहीं। सम्राट भरत ने चारों दिशाओं और छः खण्डोपर अपनी विजय पताका पहरायी इस बातपर उसे नाज एवं अभिमान है। भरत तो उसका सौतेला बेटा है फिर भी भरत के प्रति उसके दिल में बार बार ममता पनपती है। सम्राट भरत का विजय चक्र राजधानी के दरवाजे में अटक जाता है। सारे परेशान होते हैं। इस उलझन को राजगुरू सुलझाते हुए वे भरत को बताते है कि सहोदर और बाहुबली को पराजित किये बिना दिग्विजय पूरी नहीं होगी। सहोदर आते हैं और जब उन्हें यह पता चलता है कि भरत ने उन्हें छट कपट से प्रणाम करने के लिये बुलाया है आखिर आदिनाथ का कहना मानकर अपने राज्य का त्याग करके सारे सहोदर मुनिव्रत ग्रहण करते हैं। यह सारी दास्तान गुप्तचर बाहुबली को बनाते हैं। सम्राट भरत का विशेष दूत दक्षिणांक पत्र लेकर बाहुबली के पास आता है। और सम्राट भरत का आदेश बताते है। वह यह था बाहुबली उन्हें प्रणाम करें। बाहुबली को यह बात पसन्द न हीं थी। वे गुस्से की तैश में आकर कहते है कि वे जबाब जंगे मैदान में देंगे। जंग की तैयारी करने का आदेश वे महामंत्री को देते हैं। यह सब सुनकर संवेदन शील सुनन्दा चिंतीत होती है। बड़ी कुशलता से वह बाहुबली को समझाती है कि भरत उसका बड़ा भाई है वे उसे प्रणाम करें। वह ईर्ष्या का त्याग करें। तो बाहुबली भरत की सच्चाई पेश करता है। और यह बताता है कि, " आदिब्रम्हा ने मुझे और उन्हें दोनों को एक साथ एक समान राजा का बिसद दिया था तब ईर्ष्या क्यों करूँगा माँ ?

सुनन्दा – इस प्रश्न का उत्तर तुम्हें स्वयं अपने अन्तर में खोजना है। समस्या का समाधान सदा समस्या के अन्तर में छिपा होता है। मुझे विश्वास है कि मेरा बेटा प्रयत्न करेगा तो हल दूर नहीं रहेगा। (अर्थभरी दृष्टि) अदभूत प्रतिभा का स्वामी है मेरा बेटा। वह सौन्दर्य का प्रतिमान है तो, शक्ति का मानदण्ड भी है। उसकी अन्तर आत्मा इसे सुबुद्धि दें। "[8]

2) यशस्वती (सत्ता के आर–पार)

यशस्वती " सत्ता के आर–पार " पौराणिक नाटक की नारी पात्र है। वह ममतामयी नारी है। वह अहिंसा की पुजारन है। वह राजमाता है। सम्राट भरत की वह माता है। सम्राट भरत और बाहुबली के बीच जब युद्ध अनिवार्य हो जाता है जब यह खबर उसे लगती है तो वह तुरन्त अपने बेटे भरत के पास आती है और बड़ी कुशलता से भरत को समझाती है कि वह आज केवल उसकी माँ नहीं है तो वह प्रजा के रूप में यह पूछने आयी है कि क्या युद्ध अनिवार्य है। युद्ध उसे पसन्द नहीं। हिंसा से दूर रहने का आदेश वह अपने बेटे को देती है। वह तो अहिंसावादी नारी है अपने बेटे से वह कहती है " तो फिर युद्ध क्यों नहीं रूक सकता ? क्या जो कुछ तुम्हारे यशस्वी पिता–पितामह ने निर्मित किया है उसे उन्ही की संतान तुम दोनों नष्ट करके छोड़ेंगे। "

यशस्वती तो धैर्यशील नारी है। उसे अपने कुल पर नाज एवं अभिमान है। वह युद्ध का अंजाम भी जानती है। अहिंसा परमो धर्म का पालन करनेवाली यशस्वती उसे समझाती है कि भरत युद्ध से दूर रहें। बाहुबली के पास जाकर उसे भी समझाना चाहती है। लेकिन भरत को यह बात पसन्द नहीं।

वह भरत को समझाती है, " धर्म क्या है, क्या नहीं इस तर्कजाल में उलझकर कहीं नहीं पहुँचा जा सकता। बाहुबली भी धर्म की आड लेकर ही तुम्हें प्रणाम करने से इन्कार करता है। तुम प्रथम चक्रवर्ती बनो, यह मेरे लिए गौरव की बात है पर वह पद तुम्हें गृह-युद्ध के मार्ग से मिले, यह इतनी ही लज्जा का कारण भी है। बीच का मार्ग खोजना होगा, हिंसा से बचना होगा। अहंकार से मुक्ति पानी होगी। "[9]

इसतरह यशस्वती जो आदर्श माता है। संवेदन शील ममतामयी धर्मशील नारी है अपने बेटे को समझाती है कि वह अहिंसा परमो धर्म का पालन करें। वह तो अहिंसा की पुजारन है।

3) माँ (गान्धार की भिक्षुणी) :

" गान्धार की भिक्षुणी " नाटक की " माँ " यह गौण नारी पात्र है। वह बूढ़ी औरत है। वह संस्कारशील, ममतामयी नारी है। वह मालवी की माता है। मालवी के पिता का नाम मारूत था। मालव के परिप्राज्क महाराज कायर एवं नपुंसक थे। हूणों ने उन्हें कठपुतली बनाया था। हूणों ने मालव वासियोंपर मनमाने अत्याचार किये। सारी प्रजा भयभीत हो गयी। जनता का बुरा हाल देखकर सेनापति मारूत ने राजा को समझाया लेकिन राजा तो हमेशा शराब के नशे में चूर रहता था। सेनापति मारूत ने जब विरोध किया तो न रहेगा बाँस तो न बजेगी बाँसुरी यह समझकर उन्होंने सेनापति मारूत को सूली पर लटकाया। बदनसीब मालवी और उसकी माँ के दिलपर गहरी चोट लगी। अब वर अपनी बेटी के साथ खण्डहर के पीछे भग्नमन्दिर में रहती है। माँ आनन्दी को अपनी बेटी मानती है। यशोधर्मन जब सेनापति मारूत का बदला लेता है तो " माँ " निहाल होती है। वह स्वादिष्ट खाना पकाती है आपने हाथों से सबको खिलाती है। आनन्दी के दर्द से वह परिचित है। वह सिर्फ मालवी की माँ नहीं तो सब की माँ बनी है। उसके दिल में बार बार ममता पनपती है। साक्षात वह ममता की मूरत है। वह सब को दिलासा देती है। समय समयपर सुझाव देती है। आनन्दी के पुत्र गौरव के बारे में वह आनन्दी से कहती है " मैं यह भी जानती हूँ कि यशोधर्मन ने तुम से क्या का और तुमने उस दु:स्वप्न से मुक्ति पाने के लिए क्या क्या किया। मैं तुमसे एक ही बात कहती हूँ मातृत्व न शुभ होता है न अशुभ, प्रिय न अप्रिय, वह सहन होता है इसीलिए पवित्र होता है। माँ बाप ना पापी हो सकते हैं। सन्तान कभी पापी नहीं होती। इसलिए तू स्वस्थ हो बेटी ! "[10]

इसतरह सब को सहारा देनेवाली, हर इक को अपना मानकर अपनापन से प्यार का सलूक करनेवाली माँ सामान ममता की मूर्ति है।

८) डॉ. अनीला (डॉक्टर) :

डॉ. अनीला " डॉक्टर " नाटक की प्रमुख नारी पात्र है। वह शहर की सबसे बड़ी मशहूर डॉक्टर है। वह एक कर्तव्यदक्ष कुशल डॉक्टर है। मरीजों को मौत के मुँह में से वापस लाना उसके लिए आसान बात है। इससे पहले वह गँवार मधुलक्ष्मी थी। उसका ब्याह सतीशचंद्र शर्मा से हुआ। वह कम पढ़ी लिखी नारी थी। आँखों में सुनहरे संसार के सपने लेकर नयी उमंग से वह ससुराल आयी। हँसी खुशी से कुछ दिन गुजर गये। उसने एक बच्ची को जन्म दिया। वह निहाल हुयी। जिन्दगी के हँसीन मोडपर एक दिन उसके पति बड़े अफसर बने। जब से वे इंजीनियर बने उनका मनपरिवर्तन हुआ। वे गँवार मधुलक्ष्मी को अपने योग्य नहीं समझते। वे उससे नफरत करने लगे। उन्होंने उसका त्याग किया। मधुलक्ष्मी के दिलपर गहरी चोट लगी। वह अपने बच्चे को लेकर घर से जुदा हो गयी। बड़ी लगन से अभ्यास करके वह कुशल डॉक्टर बनी। बड़ी हिफाजत से उसने अपनी शशि बच्ची की परवरीश की। जब उसे शशि की याद आती है वह फौरन बच्ची के पास जाती है। वह बच्ची को अपने जिगर का टुकडा मानती है। उससे मिलने के लिए जल बिन मछली के समान तडफती है। वह जब शशि के पास गयी। इधर नयी मरीजा जिसके सरपर मौत सँवार थी उसकी हालत देखकर डॉ. अनीला के भाई दादा ने उसे अस्पताल में दाखिल किया। नयी मरीजा सतीशचंद्र वर्मा की दूसरी पत्नी थी। वापस आनेपर डॉ. अनीला गौरव को देखने के बाद आश्चर्यचकीत होती है। गोपाल उसकी सौतन का बेटा था। गोपाल की और शशि के आँखों में साम्य था। नयी मरीजा के कागजात पर वह जब सतीशचंद्र शर्मा का नाम देखती है तब उसे पूरा यकीन होता है कि नयी मरीजा उसकी सौतन है। वह फैसला करती है कि नयी मरीजा का वह ईलाज नहीं करेगी। फिर भी उसका मन परिवर्तन होता है। नयी मरीजा का ऑपरेशन करना चाहती है लेकिन उससे पहले डॉ. केशव का तार आता है कि " (तेजी से तार पढ़ती है) पैर फिसल जाने के कारण शशि गिर पड़ी। दाहिने पैर की हड्डी टूट गयी। प्लास्टर हो गया है। चिन्ता की कोई बात नहीं, मैं आ रहा हूँ, (बैठकर) हड्डी टूट गयी। ओह ! ... "[11] वह एकदम घबरा जाती है। वह अपनी बच्ची का हाल देखने के लिए किराये की टैक्सी लेकर ऑपरेशन को छोडकर हवाई अड्डेपर पहुँचती है। फिर दिलपर पत्थर रखकर अस्पताल वापस आकर नयी मरीजा का ऑपरेशन करती है। अब वह शशि के पास जाना चाहती है, वह दादा से कहती है, " (एकदम) दादा मुझे अभी शशि के पास जाना है। (शर्मा से) आप की पत्नी का ऑपरेशन सफल हुआ। वह जल्दी तगडी हो जाएगी। बधाई ! आओ केशव !"[12]

5) माँ (श्वेत कमल) :

" श्वेत कमल " नाटक में जो माँ है वह इस नाटक की गौण नारी पात्र है। वह ममतामयी, संवेदनशील अभावग्रस्त नारी के रूप में चित्रीत हुयी है। वह एक बदनसीब किस्मत की मारी बूढ़ी औरत है।

कुछ साल पहले उसके पति परलोक सिधारे। उसका एक लगते जिगर बेटा या वह भी बचपन में ही चल बसा था। उसकी चार बेटियाँ है। भरा पूरा परिवार है। माँ ने कडी मेहनता की और अपने परिवार का गुजारा किया। पेंशन मिलती है लेकिन सिर्फ उससे मकानका किराया अदा होता है। उसकी बेटी रंजना इक युवक के ईश्क में पागल होकर घर से रफूचक्कर हो गयी। वह प्रेमी युवक के रूप में एक भोईया एवं दरिन्दा निकला। उसने उसे वेश्या बनाना चाहा। रंजना के दिलपर गहरी चोट लगी। उसने खुदकुशी की। अब परिवार ी सारी जिम्मेदारी बिन्दु पर आती है। वह दप-तर में काम करती है उन पैसों से परिवार को रूखी सुखो रोटी नसीब आती है। लेकिन वह जहाँ काम करती है दप-तर के बॉस हो या मॅनेजर उसपर डोर डालते हैं। उसकी इज्जत जब खातरे में पड जाने की शंका आशंका पैदा होती है उस वक्त आदर्श बिन्दु उस नौकरीपर लाथ मारती है। जब वह नौकरी छोडकर सुशिक्षित बेरोजगार बनके घर में बैठती है तो माँ चिंतीत होती है। माँ के सामने यह सवाल पैदा होता है कि अब परिवार का गुजारा कैसा होगा। वह बिन्दु से कहती है, " (अल्पविराम) मुझे दु:ख का इतना ध्यान है लेकिन इस्तीफा देने से पहले यह नहीं सोचा कि घर का क्या होगा। मैं ही जानती हूँ मैं कैसे खींच रहीं हूँ यह गाडी। कभी आटा नहीं, कभी दाल नहीं, कभी घी नहीं, कभी तेल नहीं। लडकियों के पास पहनने को ढंग के कपडे नहीं कभी सोचा है तूने .... "[13]

उसे अपने परिवार की चिंता है। उसके सीने में इक माँ का दिल है। बिन्दु पर क्या गुजरी इन बातों से माँ अनभिज्ञ है। डॉ. विकास बिन्दु से शादी करना चाहते हैं। लेकिन अगर कमाऊ बिन्दु की शादी हुयी तो परिवार का गुजारा कैसे होगा ? यह सोचकर वह डॉ. विकास से कहती है कि शादी करना हो तो नीलिमा का हाथ उनके हाथ ढ़ोने को वह राजी होती है। क्योंकि वह सिर्फ बिन्दु की नहीं तो नीलिमा ओर प्रतिमा की भी माँ है। वह साक्षात ममता की मूरत है।

(6) करूणा (टूटते परिवेश) :

" टूटते परिवेश " सामाजिक नाटक की " करूणा " यह मुख नारी पात्र है। जो आदर्श माता है साक्षात करूणा की मूर्ति है। संस्कारशील ममतामयी कुण्ठाग्रसत नारी के रूप में इसे डॉ. विष्णु प्रभाकर ने चित्रीत किया है। भरा पूरा परिवार है। वह एक आदर्श माता है। वह परिवार की गृहस्वामिनी है। उसकी उमर 61-62 साल की है। उसके पति का नाम विश्वजीत है। उसके तीन बेटे और तीन बेटियाँ है। बडा बेटा शरत शादी शुदा है जो अपनी बीबी के साथ इसी शहर में अलग रहता है। दूसरा बेटा विमल परिवार सहित कनाडा में रहता है। छोटा बेटा विवेक सुशिक्षित बेरोजगार है। बड़ी बेटी इन्दु शादी शुदा है। वह अपने पति के साथ इसी शहर में रहती है। दूसरी बेटी मनीषा कॉलेज में प्रोफेसर है। छोटी बेटी दीप्ति अभी कॉलेज में पढ़ती है। करूणा सामान करूणा की मूर्ति है। उसके दिल में अपनी औलाद के प्रति बारबार

ममता पनपती है। नाकनक्शे में वह आकर्षक नारी है लेकिन अतिशय व्यस्तता के कारण उसके सारे व्यक्तित्वपर रूखेपन की छाप है। वह संस्कारशील आदर्श भारतीय नारी है। वह चाहती है कि सब लोग हँसी खुशी से एक साथ रहें। लेकिन उसका यह सपना सपना रह जाता है। इस मशीनी युग में नयी पीढ़ी के दिल में पुरानी पीढ़ी के प्रति थोडा सा भी प्यार नहीं है। नयी पीढ़ी अपनी मर्जी से खुदगर्जी से जीना चाहती है। इसका असर यह हुआ कि सारा परिवार शीशे के समान बिखर गया है। दिवाला का त्योहार है। लक्ष्मी पूजा के अवसर पर सारे परिवार के लोग हाजिर हो ताकि बहार आये। पति पत्नि सब को बुलावा भेजते हैं। लेकिन बड़े अफसोस की बात है कि लक्ष्मी पूजा पर आने के लिए किसी के पास समय नहीं। बड़ा बेटा और अपनी पत्नी के साथ दिवाली की रात मनाने के लिए " होटल ओबेराय " जाते हैं। इन्दुजीजी अपने पति के साथ दिवाली की रात मनाने के लिए बाहर जानेवाले हैं। यह समाचार लेकर खाली हाथ विवेक और दीप्ति वापस आते हैं। यह सब देखकर करूणा दु:खी बन जाती है। विवेक और दीप्ति भी माता पिता का दिल न टूटे इसलिए लक्ष्मी पूजा के अवसरपर ठहरें हैं। दिल से नहीं। यह सब बच्चों का व्यवहार देखकर करूणा अपने पति से कहती है, " इसीलिए तो कहती हूँ, अपनी औलाद तो सम्हाले सम्हलती नहीं, बात करते हो भारतमाता की। आशा करते हो पूजा के लिए सब तुम्हारे घर आएँगे। (अल्पविराम) लेकिन ऐसा भी होता है क्या कि जितना भी तुम प्यार प्रकट करो, उतना ही अजनबीपन तुम्हें जकड़ ले। (दर्दभरी गम्भीरता) मैं कहती हूँ कोई नहीं आएगा। तुम्हारी अपनी औलाद तक नहीं आएगी। "[14] उसे पूरा यकीन है कि लक्ष्मी पूजा के अवसर पर कोई नहीं आयेगा। लक्ष्मी पूजा का मूल्य नयी पीढ़ी की नजर में कुछ भी नहीं। यह सब देखकर उसका दिल चकनाचूर होता है।

7) सरला (अब और नहीं) :

" अब और नहीं " सामाजिक नाटक की यह गौण नारी पात्र है। वह शान्ता की माँ है। ममतामयी स्नेहशील वह आदर्श माता है। शान्ता उसकी बेटी है। शान्ता तो बेहद सुन्दर संगीत प्रेमी कलाकार लडकी है। बड़ी हिफाजत से बडे लाड प्यार से माता पिता ने शान्ता को पाला था। जब शान्ता जवान हो गयी। वह उसकी शादी करना चाहती है। शान्ता को देखने के लिए वीरेन्द्र प्रताप अपनी माँ पद्मावती के साथ आता है। दिलोजान से मेहमानों की वह मेहमान नबाजी करती है। वह बडे आग्रह से उनको खाना खिलाती है। वह उनको बताती है, कि " (कृतज्ञ) सब अकेले शान्ता बेटी ने बनाये हैं। बहुत शौक है उसे तरह तरह की चीजे बनाने का। अभी भी कुकरी की क्लास में जाती है। "[15] शान्ता के पिताजी मेहमानों को यह बताते हैं कि शान्ता को संगीत का बेहद शौक है। सितार वह बड़ी कुशलता से बजाती है। उसे पेंटिग्ज का भी शौक है। अपने माता पिता के कहनेपर शान्ता ऐसा सितार बजाती है कि वीरेन्द्र प्रताप

और पद्मावती निहाल होते हैं। उन्हे बहू के रूप में शान्ता पसन्द आती है। सरला और विश्वेश्वर भी फूले नहीं समाते।

2) आदर्श बेटी :

1) बिन्दु (श्वेत कमल)

डॉ. विष्णु प्रभाकरजी द्वारा लिखित " श्वेत कमल " इस सामाजिक नाटक में जो बिन्दु है वह नाटक की प्रमुख नारी पात्र है। वह परिवार में सबसे बड़ी है। वह आदर्शवादी साहसी, त्यागमयी नारी, विवश नारी के रूप में चित्रीत की गयी है। वह बड़ी बेटी है। उसकी उमर 30 साल की है। वह अब तक कुँवारी है। उसके परिवार में कुल मिलाकर चार पाँच व्यक्तियाँ है। वह परिवार में सबसे बड़ी होने की वजह से सारी जिम्मेदारी उसपर आ जाती है। वह कड़ी मेहनत करके चार पैसे कमाती है जिससे परिवार का गुजारा होता है। वह सुशील एवं सुशिक्षित युवती है। वह हमेशा आदर्श के रास्तेपर चलती है। घर में बूढ़ी माँ, उसकी छोटी बहना रंजना अपने प्रेमी के ईश्क में पागल बनकर एक दिन घर से रफूचक्कर होती है। रंजना का पति दगाबाज निकला। उसने रंजना को वेश्या बनाना चाहा। संस्कारशील रंजना ने खुदकुशी की। लेकिन लोग ये राज नहीं जानते। लोग तो यह समझते हैं कि वह ईसाई बनी है। विदेश में नर्स का काम करती है। बिन्दु को अपनी इज्जत दिलोजान से प्यारी है। वह आदर्श भारतीय नारी है। बिन्दु जिस दफ्तर में काम करती है वहाँ के बॉस उसपर डोर डालता है। जब उसकी इज्जत एवं आबरू खतरे में पड जाने की घडी आती है उसी पल वह अपनी नौकरी से इस्तीफा देती है। उसने नौकरी छोड दी यह जानकर परिवार के लोग परेशान होते हैं। दुनिया का दस्तूर है जिस परिवार में पिता और पुत्र नहीं है या है तो किसी कारणवश जीविका अर्जन में असमर्थ है तो वहा पुत्री को यह भार उठाना पडता है। ऐसी नारियाँ काम की तलाश में भटकती है तो पदासीन मगरमछ उसे निगलने को आतुर रहते हैं। बिन्दु इज्जत बचाने के लिये नौकरी पर लाथ मारती है। घर में बैठती है। वह विवश है, – " कब तक साप सीढ़ी का यह खेल खेलती रहूँगी, आखिर कब तक मेरे लिए जीवन का क्या केवल इतना ही अर्थ रह गया है कि एक नौकरी छोड़कर दूसरी करूँ, दूसरी छोड़कर तीसरी करूँ। फिर फिर तीसरी छोडूँ ... कहा खत्म होगा यह सिलसिला कहाँ आखिर ? "[16] परिवार की माली हालत ठीक नहीं। नौकरी छोडने की वजह उससे जब माँ पूछती है और उसे आदर्शवादी कहती है तो वह माँ से कहती है, " आदर्शवादी न होती तो इसतरह भविष्य न बिगाड लेती। पढ़ाई बीच में छोड़कर नौकरी के पीछे मारी मारी न फिरती। समझौता करके ऐश करती। तुम लोगों के पास भी बहुत बड़ा मकान होता। सब सुविधाएँ होतीं। तुम्हारी बेटियाँ बढ़िया कपडे पहनती ... बढ़िया कॉलेज में पढ़ती ... खुशियों से भर जाता तुम्हार दामन, पर ... "[17] उसे अपने परिवार की

चिन्ता मार सताती है। डॉ. विकास उससे शादी करना चाहते हैं। लेकिन वह असमर्थ है। वह त्यागमयी नारी है। उसे अपनी नहीं परिवार की चिन्ता है। वह डॉ. विकास से कहती है, " (मुस्कुराकर) डरो नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगी। मेरी दो छोटी बहने हैं, एक बूढ़ी माँ है। (सहसा गंभीर होकर) पर मैं उनके साथ अपनी खूशी नहीं बाट सकती। उनके और मेरे बीच में अजनबीपन का एक ऐसा समुन्दर घुमडता रहता है .... ।"[18]

सारे परिवार का उसपर जिम्मा है इसलिए वह शादी नहीं कर सकती। हालात ने जो ज्हर पिलाया उसे मीरा समझकर पीती है। जिगर में चोट छुपाकर हँसती है। परिवार के लिए अपने अरमानों की कुर्बानी देती है। वह आदर्श बड़ी बेटी है।

2) शुभ्रा (अब और नहीं) :

" अब और नहीं " नाटक की शुभ्रा जवाँन सुन्दर नारी है। वह वीरेन्द्र प्रताप और शान्ता की छोटी बेटी है। उसकी अभी अभी शादी हुयी है। शादी से पहले बहू बेटी शादी के बाद बहू रानी बनती है। वह बेहद खुश हुयी है। शुभ्रा भी अपनी माँ शान्ता के समान बड़ी कुशलता से सितार बजाती है। शान्ता माँ सितार बजाती है तो शुभ्रा को ताज्जुम होता है। क्योंकि शुभ्रा यह राज नहीं जानती थी। शुभ्रा सिर्फ कलाकार है तो शान्ता कलाकरों की कलाकार है। वह अपनी माँ से कहती है, " माँ इतना सुन्दर सितार बजा लेती हो। मै तो खो गयी थी दर्द के इस अमूर्त संसार में। कैसी छटपटाहट है मुक्ति की, इस संगीत में। यह सब तुमने कहाँ सीखा माँ ? "[19]

शुभ्रा को जो सितार दिया गया था वह सितार लेकर ससुराल नहीं गयी। उसके पति को घूमने का बेहद शौक है। वे उसे अपने दिल की धडकन समझते हैं। शान्ता अपनी लाडली बेटी को बताती है कि अपना सितार संभालकर रखना चाहिए वह कमरे से गोदाम में और गोदाम में से कवाडघर जाने में देर नहीं लगती। सारे पुरूष एक जैसे होते हैं। शान्ता माँ जब बिमार पडती है अपनी माँ की दशा एवं हाल देखकर वह दु:खी होती है। वह बड़े प्यारसे माँ को बताती है कि उसके पति " तुषार " को संगीत का बेहद शौक है। वह सितार लेकर जायेगी। यह सुनकर शान्ता माँ को खुशी होती है। पापा मतलब वीरेन्द्र प्रताप का दबावग्रस्त सलूक देकर या कठोर अनुशासन देखकर वक्त आनेपर वह भी विद्रोह करना चाहती है। समय आनेपर वह अपने पापा से ऐसे टकरायेगी जैसे मौज जाकर साहिल से टकराती है। उसके पति तुषार जापान की सहायता से फॅक्टरी लगानेवाले हैं। वह आदर्श पत्नी है, कलाकारा है साथ ही साथ शान्ता माँ की आदर्श बेटी है।

3) आदर्श बहू

1) मंजरी (अब और नहीं)

" अब और नहीं " नाटक में जो मंजरी है वह आदर्श बहू है। यह शान्ता की छोटी बहू ममतामयी नारी है। उसकी उमर 21-22 साल की है। वह जवॉन सुन्दर नारी है। उसके पति का नाम शशांक है जो इंजीनियर है " दिल्ली क्लाथ मिल " में काम करता है। मंजरी विश्वविद्यालय में प्रोफेसर है। मंजरी स्नेहशील नारी है। उसकी इकलौती बेटी का नाम " अमिता " है। मंजरी ने बारीकी से सारे परिवार का अभ्यास किया है। उसे इस बात का अहसास होता है कि सारा परिवार दबावग्रस्त है। सारे घरपर गृहस्वामी वीरेन्द्र प्रताप का दबाव है। सबसे ज्यादा प्रभाव शान्तापर है। 34 साल से शान्ता दबावग्रस्त है। इसलिए बिमार पड़ी ह। मंजरी को पूरा विश्वास है कि शान्ता मानसिक रोगी बनी है। शान्ता के प्रति उसके दिल में बड़ी इज्जत हे। बिमारी का कारण वह ससुरजी वीरेन्द्र प्रताप को मानती है। वह इसके बारे में पति से कहती हे, " (हँसकर बाहर जाती हुयी) वह तुम जानते हो। पापा से तुमने भी कम चोह नहीं खायी है। मैं अब तक चुप रही। बाहर की थी न। पर अब समझ गयी हूँ। पापा ने माँ की बात कभी नहीं मानी। कभी नहीं। सदा अपनी मनबायी। नहीं क्या ? "[20] वह स्पष्टवक्ता नारी है। वह अपनी सास की खिदमत करती है उसे पूरा विश्वास है कि मनोरोग तज्ञ ही शान्ता माँ का ईलाज कर सकता है। डॉ. मलिक को सारा राज बतीती है " न न मुझे कहने दो। छिपानेसे रोग और बढ़ेगा। माँ के रोग की जड बड़ी गहरी है। परिवार के कठोर अनुशासन और पापा की अधिनायकवादी मनोवृत्ति ने बहुत पहले ही माँ के स्वतंत्र मन की हत्या कर दी थी। अवसर पाकर वह मरा मन जी उठा और माँ बिमार हो गयी। "[21] डॉ. मलिक मनोचिकित्सक है। वह ससुरजी के आमने सामने खड़े होकर कहती है, " पापा तर्क हर बात के लिए गढ़े जा सकते है पर यह तर्क अब और अधिक रक्षा नहीं कर पाएगा आपकी। ममी के मानसिक रोग का कारण आप है, यह वह अच्छी तरह जानती है। वह कह रही थी तुम्हारे पापा बड़े व्यवहार कुशल थे। मेरे रूप की खुब प्रशंसा करते और मुझे बेवफूक बना देते। वह उम्र होती है बेवफूक बनने की। कोई भी उस उम्र में उसकी कमजोरियों का लाभ उठा सकता है। आपने वही किया। " ससुरजी को खुल्लमखुल्ला बाताती है। शान्ता जब घर से निकल जाती है तब मंजरी को पूरा विश्वास है। शान्ता माँ अब मुक्त हुयी है वह वापस नहीं आयेगी इसतरह मंजरी स्नेहशील, स्पष्ट वक्ता एवं आदर्श बहू है।

2) सावित्री (बन्दिनी) :

सावित्री " बन्दिनी " सामाजिक नाटक की गौण नारी पात्र है। वह ममतामयी, स्नेहशील एवं करूणाशील नारी के रूप में चित्रीत हुयी है। वह जमींदार कालीनाथ की बडी बहू है। उसके पति का नाम

उपेन्द्र है। उसके इकलौते बेटे का नाम अन्नु है। अन्नु शरारती एवं नटखट है। यह मासूम बच्चा हमेशा उमा के पास ही रहता है। उमा सावित्री की छोटी देवरानी है। सावित्री और उपेन्द्र को ऐसा लगता है कि अन्नु उनका नहीं तो उमा का ही बेटा है। उमा के दिल में उसके लिए बार बार ममता पनपती है। सावित्री आदर्श बड़ी बहू है। वह उमा को लगते जिगर अपनी बेटी मानती है। जमींदार कालीनाथ सपने में दिये हुये कालीमाता के आदेश को मानकर उमा को ही कालीमाता मानते है। उसे दबाव से पूजा स्थल पर बिठाते है। उसकी पूजा करते हैं। सुबह शाम भजन कीर्तन होता है। सारे गाँव के लोग अन्धविश्वास के शिकार है। वे सचमुच उमा को ही कालीमाता मानते हैं। अन्धविश्वासी जमींदार के दबाव से भोली भाली उमा तो मानो पाषाण बनके पूजा स्थल पर बैठी हुयी है। उसकी आँखों से झर झर आँसू बहते हैं उस समय बडी बहूँ सावित्री उमा के पास जाकर उसे दिलासा देती है, " वहीं तो करने आयी हूँ। तू खाना-पीना मत छोड। देख तो तीन दिन में ही तूने अपना क्या हाल कर दिया। न-न अपने को इस तरह मत मार। सुरेन्द्र से मैंने कह दिया है वह कोई न कोई रास्ता निकालेगा ही। " [22] उमा की दशा देखकर उसके दिल में दया एवं करूणा पनपती है। उसे वह दिलोजान से समझाती है कि वह उसकी देवरानी नहीं तो माँ है। वह कहती है, " पगली मैं तेरी माँ जैसी हूँ, जब तू अगिन में छोटी बहू बनकर आयी थी तो तूझे मैंने गोद में उठा लिया था। तूझे मरने दे सकती हूँ। (धीरे से) हो सकता है वह आज भी आ जाये। "[23] वह उसे दिलासा देती है। इसतरह वह स्नेहमयी, करूणाशील नारी अन्धविश्वासी जमींदार कालीनाथ की आदर्श बहू है।

4) आदर्श बहन

1) ब्राह्मी (सत्ता के आर-पार) :

सत्ता के आर-पार नाटक की ब्राह्मी सम्राट भरत की प्यारी एवं आदर्श बहना है। सम्राट भरत और बाहुबली में अहिंसक युद्ध होता है। इस जंग में भरत की हार हो जाती है। भरत बदले की आग में जलते हुए बाहुबली पर झपटते है। यह सलूक देखकर सारी सेना हतप्रभ होती है। सत्ता के लिये भरत धर्मयुद्ध की मर्यादा भूल गये यह देखकर बाहुबली ऐसी सत्ता का धिक्कार करते हुए वे अपने राज्य का त्याग करके वे मुनि बनकर तपस्या करने के लिये जंगल में जाते हैं। बाहुबली प्रतिमायोग धारण किये हुये है। साल से दो तलवों पर खड़े हैं। न आहार न जल और न संचरण। लताएँ उनके जिस्म से लिपटी है। सम्राट भरत के साथ ब्राह्मी बाहुबली के पास आती है। अपने भाई की दशा देखकर उसके दिल में यह शंका पैदा होती है वह भरत से कहती है, " हाँ कामदेव की वह काया जो सबके आदर श्रद्धा और प्यार का केन्द्र थी वह मिट्टी हो गयी। फिर भी मुक्त नहीं हो पा रहा है मेरा वीर। क्यों ... "[24]

वह बाहुबली की सौतेली बहन है फिर भी बाहुबली के प्रति उसके दिल में प्यार है। इतना कठोर

तप करने के पश्चात भी उसे मुक्ति क्यों नहीं मिलती यह चिंता उसे सताती है। वह आदर्श एवं प्यारी बहना है।

2) सुन्दरी (सत्ता के आर-पार) :

सुन्दरी यह शक्तिशाली बाहुबली की सगी आदर्श बहना है। जब सम्राट भरत और ब्राह्मी जंगल में जाकर बाहुबली का तपस्वी रूप देखते हैं उनके दिल में यह शंका पैदा होती है कि इतनी कड़ी तपस्या करने के बाद भी बाहुबली को केवल ज्ञान प्राप्त नहीं होता ? उसे मुक्ति क्यों नहीं मिलती ? उसवक्त सुन्दरी वहाँ आती है वह ज्ञानी नारी है। वह यह बताती है कि भगवान आदिनाथ ने कहा था कि जिस भूमिपर खडे रहकर बाहुबली तप करता है वह भरत की है और साथ ही साथ बाहुबली की कृपा से ही सम्राट भरत चक्रवर्ती बना है। यह काँटा भरत के मन में चुभ रहा है उसे शांति नहीं मिलती। यह राज की बात बताने के बाद सम्राट भरत को भी अपनी गलती का अहसास होता है वह भी दोष मुक्त होता है। अपने तपस्वी भाई को मुक्ति मिले इसलिए वह बाहुबली के पास आकर वह एवं ब्राह्मी कहती है, " (एक साथ) भैया हमारे। बहुत हुआ अब आप भी हाथी से नीचे उतरें। "[25]

तपस्वी बाहुबली भी अहंकार का त्याग करते हैं। उसका मन निर्मल हो जाता है। उन्हें मुक्ति मिलती है। अहंकार के हाथी से नीचे उतरे सुन्दरी के आदेश का पालन करने से बाहुबली को मुक्ति एवं केवल ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

3) भिक्षुणी (नव-प्रभात) :

(कलिंग की राजकुमारी)

यह जवाँन और सुन्दर नारी है। उसके नाक नक्श तीखे हैं। उसका व्यक्तित्व एसा है कि लोग प्रभावित होते हैं। सुन्दरता मेंवह लाखों में एक है। भिक्षुणी का वेश उसने परिधान किया है। लेकिन असल में वह कलिंग की राजकुमारी है। साम्राज्य विस्तार की लिप्सा ने कलिंग देशपर कब्जा किया। घमासन जंग हुयी। हजारों आदमी मर गये। अनगिनत घायल हुए। मानों कयामत आयी। खून की नदी बहने लगी। घायल जख्मी एवं लोगों के आलाप विलाप से तहलका मच गया। मानों महानाश हो गया। कलिंग वासी अपने देश के लिए शहीद हुए। कलिंग के राजा भी अपने वतन के लिए कुर्बान हो गए। कलिंग के राजकुमार " कुमार " को भी बन्दी बनाया गया। यह जब मंजर देखकर कलिंग की राजकुमारी के दिलपर गहरी चोट लगी। सम्राट अशोक के प्रति उसके दिल में प्रतिशोध की भावना पनपती है। उसका खून करना वह अपने जिन्दगी का मकसद समझती है। देशभक्ति की भावना उसमें कूटकूट से भरी है। जंगे मैदान में जो जख्मी एवं घायल हुए उनका वह दिलोजान से ईलाज करती है। उनकी खिदमत करती है। कलिंगवासीयों के दिल में दुबारा युद्ध के लिए आग

भडकाती है। उनका जोश एवं उत्साह बढ़ाती है। उन्हे जंग के लिए उकसाती है। उसे बन्दी बनाया जाता है। सेनापति ने संदेश भेजा था कि यह भिक्षुणी जख्मी एवं घायलों का ईलाज कर रही थी। भिक्षुणी का आदेश सर आँखोपर मानकर अशोक के सैनिकों ने भी घायलों की सेवा की। अशोक ताज्जुब होता है। भासवाकी के दिल में यह शंका पनपती है कि यह भिक्षुणी शायद असाधारण नारी है। राजकुल से सम्बन्ध रखती होगी। भिक्षु के वेश में छद्म वेशधारी गुप्तरचर बन्धुजीव आकर सम्राट अशोक को यह राज बताता है। " जी हाँ घायलों की सेवा नहीं कर रही थी, सम्राट से मिलने का मार्ग सरल कर रही थी। मैंने उसे उसके असली रूप में देखा है।

अशोक : कौन है वह ?

भिक्षु : ठीक, ठीक पहचान नहीं पाया, सम्राट। पर है तो वह किसी बड़े कुल की। ... "[26]

अंत में भिक्षुणी को जब बन्दी बनाकर सम्राट अशोक के पास लाया जाता है। तो सम्राट अशोक को वह बताती है कि वह कलिंग की राजकुमारी है वह उससे कहती है, " (गंभीर होकर) हाँ, सम्राट आप मेरे पिता के हत्यारे है। आपने मेरे देश को उजाडा है। मैं भी आपकी हत्या करने का निश्चय करके घर से निकली थी। मैंने भी आपका नाश करने के लिए ये वस्त्र धारण किये थे ... पर ... पर "[27]

लेकिन भिक्षुराज से उसने प्रवज्या ली और उसका मन परिवर्तन हुआ।

4) सुरेखा (युगे-युगे क्रान्ति) :

सुरेखा इक जवाँन लडकी है। वह विमल और शारदा की लाडली बेटी है। उसका भाई प्रदीप ईसाई लडकी जैनेट से शादी करता है। विमल और शारदा चाहते हैं कि जैनेट को शुद्ध करके उनका जान्हवी नाम देंगे। प्रदीप अगर उस जैनेट का धर्म परिवर्तन करे तो ही वे उन्हें अपने घर में जगह देंगे। वे उन्हे अपनायेंगे। लेकिन ऐसा करने के लिए प्रदीप राजी नहीं होता। उस वक्त सुरेखा वहाँ आती है। उसे इस बात की बेहद खुशी होती है कि प्रदीप ने जैनेट से शादी करके क्रांति की है। वह आदर्श बहना है। अपने भाई के प्रति उसके दिल में प्यार पनपता है। बड़ी कुशलता से वह अपनी माँ को समझाती है, " बिना सहे क्या कुछ होता है माताजी ? और सहनने के लिए जरूरत होती है साहस की नयी क्रांति का जन्म होता है। क्रांति के बिना समाज में परिवर्तन नहीं हो सकता। आपको तो खुश होना चाहिए कि आपके बेटे ने साहस किया। आप लोगों ने भी एक दिन ऐसा ही साहस किया था। "[28] सुरेखा प्यारी बहना है उसके विचार है कि मनुष्य मनुष्य है धर्म मन और जाति बदल जाने से वह नहीं बदलता। कुल जाति और समाज के भय से शुद्धि का ढोंग करना मनुष्य एवं मनुष्यता का घोरतम अपमान है। अपने भाई ने जैनेट से शादी करके साहस दिखाया इस बातपर उसे नाज एवं अभिमान है। वह जैनेट भाभी से यह गुँजाईश करती है कि कल जब सुरेखा का अपना

घर होगा तो वहाँ वह अपने भाई भाभी का दिलोजान से स्वागत करेगी। वह एक आदर्श एवं प्यारी बहना है।

5) आदर्श प्रेमिका :

1) आनन्दी (गान्धार की भिक्षुणी) :

आनन्दी गान्धार की भिक्षुणी है। वह जवाँन सुन्दर नारी है। हूण सरदार ने उसकी इज्जत लूटी तब वह खुदकुशी करनेवाली थी। लेकिन संजोग से उस समय यशोधर्मन आते हैं और उसका मनपिरवर्तन करते हैं। राजा यशोधर्मन दशपूर के विजयपति वीर श्रेष्ठ है। जो शूर वीर एवं धर्मशील राजा है। राजा यशोधर्मन के प्रति आनंदी के दिल में इश्क एवं प्यार पनपता है। वह उसे दिलोजान से चाहती है। वह रणचण्डी एवं वीरांगना बनके मालववासियों को युद्ध के लिए उलझाती है। लोगों के दिल में देशप्रेम की भावना भडकाती है। लोगों को यह अहसास दिलाती है कि इसी प्रदेश में एक ही ऐसा व्यक्ति है जो हूणों से मुक्ति दिला सकता है और वह है राजा यशोधर्मन वह मालव वासियों को बतीती है, " वह है दशपूर का विजय पति वीर श्रेष्ठ यशोधर्मन। उसी ने गुप्त सम्राट भानुगुप्त को विद्रोह करने की प्रेरणा दी थी। उसी ने मुझे आत्महत्या करने से रोककर बदला लेने की राह सुझायी थी। इसी ने गंगा के कछार में गुप्त सम्राट के साथ मिलकर हूणों को पराजित किया था। उसी से मिलने यहा आयी हूँ। "[29] वह अपने प्रेमी राजा यशोधर्मन से मिलने के लिए बेताब है। उसे पूरा विश्वास है कि राजा यशोधर्मन ही मालव वासियों को मुक्त करा सकता है। राजा यशोधर्मन भी उसे अपने दिल की धडकन समझते हैं। आनन्दी का बेटा गौरव जो तक्षशिला की भिक्षुणी ने राजा यशोधर्मन के हाथ में सौंपा था। राजा यशोधर्मन भारती के साथ गौरव को आनन्दी के पास भेजते हैं। बच्चे को पाकर आनन्दी निहाल होती है। राजा यशोधर्मन उसे हूण सरदार से बचाते हैं। क्योंकि हूण सरदार आनन्दी और गौरव को ले जाना चाहता था। यशोधर्मन उससे कहते है, " आप मर जाती तो आज विजय की देवी हमारा वरण कैसे करती ? आप तो मेरी प्रेरणा है।

आनन्दी – (वही भावातिरेक) मैं आप की प्रेरणा ! एक बार फिर से तो कहों, जनेंद्र मैं आप की प्रेरणा हूँ। "[30] यशोधर्मन उसके कन्धेपर हाथ रखते है। अपने दूसरे हाथ से उसे वह दबाती है। वह अपने पिया का आदेश सर आँखोंपर मानती है। अपनी प्रेमी के साथ चलने में उसे अलौकिक सुख मिलता है। लेकिन अपना प्रेम प्रकट करने का साहस उसके पास नहीं। हूण सम्राट मिहिरकुल जब पीछे से यशोधर्मन पर वार करता है। अपने प्रेमी को बचाने के लिए आनन्दी वह वार अपनी छातीपर झेलती है। अपने प्रेमी के लिए वह अपनी जान कुर्बान करती है ऐसी यह आदर्श प्रेमिका है।

2) मालवी (गान्धार की भिक्षुणी)

" गान्धार की भिक्षुणी " में जो मालवी है वह जवॉन सुन्दर हसीना है। देशप्रेम की भावना उसमें कूटकूट के भरी है। सेनापति मारूत की वह कन्या है। हूण सरदार ने मालव के राजा परिव्राजक को कठपुतली बनाया है। मालव के परिप्राजक राजा नपुंसक एवं कायर है। हूणों ने मालव वासियोंपर मनमाने अत्याचार किये। औरतों की इज्जते लूटी। मारूत सेनापति ने राजा का विरोध किया तो हूणों ने उसे सूलीपर लटकाया। मालवी सैनिकी लिवास पहनकर जिन्दादिली से जंगे मैदान में आती है। वह देशप्रेम के गीत गाकर जनता के दिल में देशभक्ति का शोला भडकाती है। मालवी कीर्तिवर्मा को दिलोजान से चाहती है। कीर्तिवर्मा मौखरियों के राजकुमार है। आनन्दी के कहनेपर यशोधर्मन मालव वासियों के नेता बने हैं। उनका साथ कीर्तिवर्मा और नरवर्धन देते हैं। कन्नोज के मांडलिक नरेश ईश्वर वर्मा के कीर्तिवर्मा छोटा भाई है। आनन्दी और मालवी घूम फिरकर अपनी ओज भरी वाणी से मालव वासियों के दिल में देशप्रेम का अलख जगाती है। उसे पूरा विश्वास है राजा यशोधर्मन दूसरे स्कंदगुप्त बनेंगे और मौखरियों का युद्ध कौशल कीर्तिवर्मा के रूप में प्रगट होगा। विनय के उपलक्ष्य में मालती की माँ वाकले और लपसी बनाती है। तो कवि, कीर्तिवर्मा का उस समय यह कथन देखिए – कीर्तिवर्मा – " नहीं जैनेंद्र, ऐसा कुछ नहीं है। आज की विजय के उपलक्ष्य में यह आयोजन है। अंत में जाने से पहले वह कहती है वस्तुमित्र – एक ही बात है। जैनेंद्र का विजय का वरण किया है। और आप मालवी का करेंगे। आओ चलें.। "[31]

वह राजा यशोधर्मन से कहती है, " (दूर जाते हुए) तब आप कुछ न दे सकेंगे, चलो कुमार।

यशोधर्मन – " जैनेंद्र इतना निर्धन नहीं है कि याचक को निराश लौटा दे। मैं तुम्हें अपनी दक्षिण भुजा देता हूँ। मैं कुमार को तुम्हें देता हूँ। " [32] कीर्तिवर्मा को पाकर मालवी निहाल होती है। उसके अरमानों की झोली भर जाती है। वह देशप्रेमी, एवं रणचण्डी साथ ही साथ आदर्श प्रेमिका है।

3) अम्मुकुट्टी (केरल का क्रान्तिकारी) :

" केरल का क्रान्तिकारी " सामाजिक नाटक की अम्मुकुट्टी प्रमुख नारी पात्र है। वह प्रेमिका, रणचण्डी देशप्रेमी एवं आदर्श प्रेमिका है। वह एक जवॉन सुन्दर नारी है। वह नायर युवती है। मुड्डु, नेडियतु और मुलकच्चा पहने हुये हैं उसकी आँखों में आत्मविश्वास झलकता है। वह वेनुतम्पी दलवा की प्रेमिका है। वेलुतम्पी दलवा को वह दिलोजान से चाहती है। वेलुतम्पी दलवा केरल का क्रांतिकारी है। वह बॉंका जोशीला एवं जिन्दादील जवान है। निरंवितांकुर के महाराज धर्मराज के महल से गहनों की चोरी हुयी। वेनुतम्पी दलवा ने तीन दिनमें ही चोर को पकड़ लिया। महाराज ने उसे तालुकेदार बनाया। कुशल प्रशासन और न्यायप्रियता के कारण दलवा ने सब का मन जीत लिया। महाराज के चापलुस सेवक जयन्तन खुद मुख्यमंत्री बना। प्रजापर सितमगर सितम छाए। मनमाने अत्याचार किया। इसका असर यह हुआ कि सारे

राज्य में अराजकता फैल गयी। लोगों में क्रांति की भावना भडक उठी। वेनुतम्पी दलवा क्रांति के नेता बने। वे वाणीज्य मंत्री बने। उससे पहले जयन्तन और उसके गिरोह को पकड लिया। अपने राज्य को बचाने के लिये दलवा ने फिरंगियों से संधी की। ऐसे जहाबाज आदमी से मिलने के लिए अम्मुकुट्टी जल बिन मछली के समान तडफती है। वह उसकी आगोश में या बाहों में समा जाना चाहती है, विरह की आग में वह शमा बनके जलती है। वह अपने आप से ही कहती है, " मेरे, मन तू इतना उदास क्यों है ? जिस बात की अब कोई सम्भावना नहीं उसके लिए मन में आशा के दिप जलाये रखना क्या अच्छी बात है ? फिर दलवा तो आजकल बड़ी निकट स्थिति में फँसे हैं। ऐसे ये कोई किसी के अलिंगन में बंधने की कल्पना कैसे कर सकता है। (अल्पविराम) लेकिन मैं अपने मन का क्या करू ? (सहसा तीव्र होकर) नहीं नहीं मैं ऐसा कुछ नहीं करूँगी जिससे दलवा दुर्बल बने। मैंने उसका वरण किया है, मैंने उन्हें प्यार दिया है, मैं उन्हें छोटा नहीं होते नहीं देख सकती नहीं होने दूँगी ... । "[33] इससे पता चलता है कि उसके दिल में दलवा के प्रति कितना प्यार है। दलवा का अपने प्रेमी के आदेश पर अपनी जान तक कुर्बान करने के लिए वह तैयार हो जाती है। अपने पिया के कहनेपर वह क्रांति का अलख सारे देश में जगाती है। चारिणा बनकर सारे देश को जगाती है। वेनुतम्पी दलवा तो उसे अपनी चेतना मानता है। यह सुनकर वह निहाल होती है दोनों का यह वार्तालाप

वेनुतम्पी दलवा : परीक्षा लेने देने की परिधि से तुम बहुत उपर उठ चूकी हो। अम्मु। तुम्हें तो चारिणी बनकर देश को जगाना है। जनमन में जो असंतोष उभरा है उसी अमूर्त को मूर्त रूप देकर उन्हें संघर्ष के लिए तैयार करना है। यह समझ लो कि तुम मेरी चेतना हो।

अम्मुकुट्टी : मैं नहीं जानती थी कि आप मुझे अपने इतना पास समझते हैं। विश्वास रखिए, अब आपकी यह चेतना जनमत की चेतना बन चुकी है। आपके साथ खड़े होने का सौभाग्य पाकर मैं धन्य हो गयी। "[34]

अपने देश को बचाने के लिए दलवा महाराज के पास जाकर खुदको विद्रोही घोषित करने के लिये कहते हैं। वे जंगल में जाकर छुपते हैं। जाने से पहले वह दलवा से कहती है, " मेरी चिन्ता क्यों हुयी तुम्हें? मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगी, माँ भडकाली ने चाहा तो फिर किसी दिन मिलेंगे हम। तब तक चिर दिन के मेरे साथी विदा, विदा मेरे प्रिय ...

वेनुतम्पी : हम अलग कहाँ है जो तुम विदा माँग रही हो ? एक दिन मैंने कहा था न कि तुम मेरी चेतना हो और चेतना शरीर से अलग कहाँ होती है ? आज वह प्रमाणित हो गया। जाओ मेरा काम करती रहो। "[35]

वह अपने प्रेमी के लिए मर मिटना चाहती है। अपने पिया के आदेश सर आँखोंपर माननेवाली वह

एक आदर्श प्रेमिका है।

4) जैनेट (युगे-युगे क्रान्ति) :

" युगे युगे क्रान्ति " की जैनेट इक जवाँन खुबसुरत लडकी है। वह प्रदीप को दिलोजान से चाहती है। जैनेट तो निम्न जाति की लडकी है। उसके पिताजी कोली थे। लेकिन अब वे ईसाई बन गये है। प्रदीप जब जैनेट से शादी करना चाहता है। तो प्रदीप के पिता विमल और शारदा परेशान होते हैं। यह सब 1942 की बात है। प्रदीपक के माता पिता जैनेट को अपनी बहू बनाने के लिए राजी नहीं थे। उन्होंने अपने बेटे को कुशलता से समझाने की कोशिश की। लेकिन उनकी सारी कोशिशे नाकामयाब रही। प्रदीप अपने फैसलेपर अड़ीग रहा। उसका ईरादा पक्का एवं बुलन्दी रहा। जैनेट से उसने कोर्ट में जाकर शादी की। जैनेट दप-तर में काम करती है। शादी करके नयी उमंग से वह जैनेट के साथ अपने माता से मिलने के लिए आता है। प्रदीप के माता पिता चाहते हैं कि जैनेट को शुद्ध करके जान्हवी नाम दे दो। वे जैनेट का धर्मपरिवर्तन करना चाहते हैं। अगर ऐसा हुआ तो ही वे प्रदीप को अपने घर में जगह देंगे। लेकिन माता पिता की ये बाते प्रदीप को पसन्द नहीं थी। अगर माता पिता की बात प्रदीप नहीं मानता तो उसे जायदाद का हिस्सा नहीं देंगे। ऐसी वह प्रदीप को धमकी देते हैं। लेकिन प्रदीप टस से मस नहीं होता। इस समय साहसी समझदार जैनेट शारदा से कहती है, " मैं सब समझती हूँ माताजी ! लेकिन यदि आप जैसी मैं हूँ वैसी ही को स्वीकार नहीं करती तो मैं भी इनको यहाँ रहने के लिए कैसे कह सकती हूँ। "[36] सुरेखा प्रदीप की बहना है वह वहाँ आकर अपने माता पिता को समझाती है धर्म मन जाँति बदल जाने से वह नहीं बदल जाता। कुल जाति और समाज के भय से शुद्धि का ढोंग करना मनुष्य और मनुष्यता का घोर अपमान है। वह प्रदीप और जैनेट का हौसला बढ़ाती है। प्रदीप और जैनेट ने शादी की यह देखकर उसे बेहद खुशी हुयी थी। वह कहती है कि जब उसका अपना घर होगा तो वह अपने भाभी का स्वागत करेगी। यह सब देखकर जैनेट का हौसला दुगुना तिगुना बढ़ जाता है वह सुरेखा बहन से कहती है, " सच सुरेखा बहन, तुमने मुझे बहुल बल दिया। मुझे जीत लिया। मैं अब और भी शक्ति के साथ समाज का मुकाबला करूँगी। "[37] वह एक आदर्श प्रेमिका है।

5) जरीना (टूटते परिवेश) :

यह टूटते परिवेश इस नाटक की गौण नारी पात्र है। 20-21 साल की यह ज्वाँन सुन्दर लडकी है। उसका रंग साँवला सलौना है। वह फॅशनेबल आधुनिक मतलब मॉडर्न लडकी है। वह विवेक से प्यार करती है। विवेक भी उसे अपने दिल की धडकन समझता है। वह विवेक का पासपोर्ट लेकर विवेक के घर आती है। वे विदेश यात्रा पर जानेवाले हैं। कुल मिलाकर जो विदेशयात्रा पर उनका दल जानेवाला है उसमें छः युवक

युवतियाँ शामिल है। वे सारे अध्ययन करने के लिए विदेश यात्रा पर निकले हैं। वे पैदल घुम फिरकर विशेष अध्ययन करना चाहते हैं। एक घण्टे के बाद वे जानेवाले हैं। वह जाँति की मुस्लीम है लेकिन विवेक से प्यार करती है। वह विवेक की अनन्य मित्र है। विवेक के पिता विश्वजीत नहीं चाहते कि परायी की लडकी के साथ विवेक विदेश यात्रा पर जाए। लेकिन विवेक टस स मस नहीं होता। वह अपने फैसले पर अडिग रहता है। उसका इस घर में दम घुटता है। उसे घर से नफरत है। वह घर से मुक्त होना चाहता है। जरीना जोशिली लडकी है। अनोखी अदा से वह बाते करती है। दुनिया की वह परवाह नहीं करती। वह विवेक को दिलोजान से चाहती है। बुजुर्ग लोगों के सामने विवेक से खुल्लमखुल्ला प्यार करती है। वह मॉडर्न लडकी है। उसके विचार है " जिन्दगी किसी को दो बार नहीं मिलती। " इसलिए जिन्दगी के हर एक पल से वह प्यार करना चाहती है। वह विवेक की प्रियतमा है।

6) आदर्श पत्नी :

1) महादेवी (सत्ता के आर-पार) :

" महादेवी सत्ता के आर-पार " नाटक की नारी पात्र है। वह बाहुबली की आदर्श पत्नी है। वह पतिपरायणता नारी है। जैसी ही वह शान्त, सौम्य और रूपवती है वैसा ही उसका व्यक्तित्व भी तेजोदीप्त है। वह पति को अपने सर का सरताज मानती है। जब शक्तिशाली बाहुबली एकदम गंभीर होते हैं तो महादेवी के दिल में यह आशंका पैदा होती है कि कामदेव सादृश्य उसके पति आज इतने गंभीर क्यों है ? वह अपने पति को साक्षात शक्ति का मानदण्ड समझती है। पति से कहती है कि उसे पूरा विश्वास है कि " " जो शक्ति का मानदण्ड है उसे भी कोई संकट विचलीत कर सकता है ? मानुश्री अभी कुछ कह रही थी। किसी को किसी से ईर्ष्या हो रही है। मेरे अराध्य देव के राज्य में ईर्ष्या किस को कहते ? " [38] जब उसे यह पता चलता है कि सम्राट भरत ने चक्रवर्ती पद पाने के लिये छः खण्डों के नरेशी देवों और दानवों को मानमर्दन किया है तो उसे बेहद खुशी होती है। वह दरियादिल नारी है। सम्राट भरत तो महादेवी के जीजा है। वह बधाई का सन्देश भेजना चाहती है लेकिन बाहुबली से उसे पता चल जाता है कि सम्राट भरत बाहुबली को अपने मार्ग की बाधा मानते हैं। उनका आदेश है कि साकेत आकर बाहुबली उन्हें प्रणाम करें। जबतक वे प्रणाम नहीं करेंगे तब तक सम्राट भरत चक्रवर्ती पद प्राप्त नहीं कर सकते। उसवक्त स्वाभिमानी, धर्मशील महादेवी ये बात मंजूर नहीं वह अपने पति से कहती है, " यह सुनकर मैं धन्य हुई देव। आपकी सहधर्मिणी होने को गौरव सदा मुझे उन्माद से भरता रहा है। मेरे स्वामी किसी राजराजेश्वर को प्रणाम करें यह मैं कभी नहीं चाहूँगी ... परन्तु ... (ठिठकती है)

बाहुबली : परन्तु क्या कहना चाहती है महादेवी ?

महादेवी : यही कि भगवान आदिनाथ ने, जो आपके और जीजा जी दोनों के पिताश्री भी है, उन्होंने नया रूप दिया है समाज को। उन्होंने बताया है कि सभ्य नहीं है जो हिंसा से दूर है। "[39]

वह तो अहिंसा की पुजारन है। उसे वह अपने पति की विजय कामना करते हुए पति को यह समझाती है कि भगवान आदिनाथ के उपदेश का पालन करें। वह आदर्श नारी है। पति को परमात्मा समझती है।

2) कारूवाकी (नव-प्रभात) :

" नवप्रभात " की कारूवाकी हसीन जवाँन सुन्दर है। वह सम्राट अशोक की लाडली छोटी रानी है। वह आदर्श पत्नी है। सम्राट अशोक ने कलिंग देश पर कब्जा किया। खून की नदी बहने लगी। जख्मी एवं घायलों को चीत्कार, अलाप एवं आक्रोश से चारों तरफ हाहाकार मच गया। कलींग मानो स्मशान बन गया। यह सब देखकर रानी कारूवाकी दु:खी बन जाती है। वह संवेदनशील नारी है। उसका दिल बहलाने के लिए गायिका रेवा आती है। लेकिन वह गीत नहीं सुनना चाहती वह रेवा से कहती है, " नहीं रेवा अब नहीं। तुम जितना सरस गीत गाती हो मन उतना ही विरस हो त है, (नि:श्वास) न जाने यह युद्ध कब समाप्त होगा ? मरे हुए ढोगों की संख्या गिनते-गिनते ऐसा लगने लगा है कि जैसे हम सब मरे हुए है। क्योंकि उनके सामने जो जीते है उनकी तो कोई गिनती ही नहीं है। "[40] वह युद्ध नहीं चाहती। उसका मन ऊब गया है। दस दिन से युद्ध शुरू है। महानाश की यह लीला देखकर उसके दिलपर गहरी चोट लग जाती है। वह सम्राट अशोक से कहती है, " सभी का उब उठा होगा स्वामी ! वह बात ही ऐसी थी। शस्त्रों की खटपट, असहाय घायलों की करूण पुकार चिताओं से उठता हुआ आहों का धुआँ, उनके ऊपर मंडराना हुआ जयघोष। तब कुछ ऐसा लगता था जैसे ...

अशोक : जैसे ... रूक क्यों गयी देवी ! बताओं तब कैसा लगता था।

कारूवाकी: जैसे किसी माँ के इकलौते पुत्र की शवयात्रा का जुलुस निकल रहा हो। "[41]

इस तरह वह युद्ध से परेशान है। वह बड़ी कुशलता से सम्राट अशोक को समझाने का प्रयास करती है। वह एक आदर्श पत्नी है।

3) उमा (बन्दिनी) :

उमा विष्णु प्रभाकर जी द्वारा लिखीत " बन्दिनी " सामाजिक नाटक की प्रमुख नारी पात्र है। वह स्नेहशील, ममतामयी एवं आदर्श पत्नी है। उमा एक जवाँन सुन्दर युवती है। वह बालिका वधू बनके ससुराल आयी थी। संजोग से उसकी शादी जमींदार के छोटे बेटे सुरेन्द्र से हुयी। मायके से जुदा होकर जब वह ससुराल आयी तो वह निहाल हो गयी। पति उसे दिलोजान से चाहते हैं। ससुरजी कालीनाथ की वह छोटी

बहू है। उसके बडे देवर का नाम उपेन्द्र और देवरानी का नाम सावित्री है। सावित्री के नटखट एवं शरारती बच्चे अन्नु के प्रति उसके दिल में बार बार ममता पनपती है। अन्नु उससे जुदा नहीं होना चाहता। पति सुरेन्द्र तो उसे अपने दिल की धडकन समझता है। एक पल भी वह उससे अलग नहीं होना चाहता। सुरेन्द्र उससे कहता है, " प्यार क्या होता है यह तो न बताया जा सकता था और न अब। पर उमा मैं तो इतना ही जानता हूँ कि अब मैं क्षण-भर के लिए भी तुमसे जुदा नहीं रह सकता। रहना भी नहीं चाहता। यही चाहता हूँ कि तुम हो, मैं हूँ, और .... "

उमा : और कौन ?

सुरेन्द्र : और कोई नहीं, कोई भी नहीं, तीसरा कोई नहीं। बस दो। और दो भी क्या, दोनों मिलकर एक। सृष्टि के आरंभ में आत्मा एक थी फिर दो भागों में बँट गयी। अब फिर एक होने को व्याकुल है। इसलिए हम एक होना चाहते हैं, और चाहते क्या है। नहीं है क्या ? " [42]

उमा तो शरम से पानी पानी हो जाती है। दिन में सुरेन्द्र और उमा खुल्लमखुल्ला मिल नहीं पाते इसलिये बहाना करके उसे लेकर वह शहर जाना चाहता है। उमा को लेकर शहर जायेगा वहाँ वह नौकरी करना चाहता है। उमा से अलग होकर जिन्दा रहना अब उसके बस की बात नहीं। उमा तो शर्मो हया की पुतली बन गयी है। वह साक्षात आदर्श पत्नी है। पति की मीठी बाते सुनकर, प्यार पाकर उसकी अरमानों की झोली भर गयी है। वह सुरेन्द्र से कहतीहै, " (धीमे उच्छ्वासित स्वर में) जी करता है इसी तरह तुम्हारे वश में मुँह छिपाकर सारे दिन प्रेम का कलकद - नाद सुनती रहूँ। " उमा आदर्श पत्नी है। वह पती के रंग में रंग गयी है।

4) करूणा (टूटते परिवेश) :

करूणा आदर्श पत्नी है। वह भारतीय नारी है पति को परमात्मा मानती है। सर का सरताज समझती है। वह मध्यमवर्गीय परिवार में रहती है। पति पत्नी चाहते हैं कि परिवार के सब बच्चे हँसी खुशी के साथ एक साथ रहें। लेकिन जमाने के साथ बच्चों की नीयत बदली। बड़ा बेटा अपनी पत्नी के साथ अलग रहता है। दूसरा बेटा अपने परिवार के साथ कनाडा में रहता है। छोटा बेटा सुशिक्षित बेरोजगार है। इस लालाशाही के जमाने में उसे नौकरी नहीं मिलती। वह भी परिवार से मुक्त होकर अपनी प्रियतमा के साथ विदेश यात्रा पर जाता है। दूसरी बेटी मनीषा घर से भागकर " किस्टोफर " से शादी करती है। यह सब देखकर करूणा और उसके पति विश्वजीत के दिलपर गहरी चोट लगती है। दिवाली के त्योहार में लक्ष्मी पूजा के अवसरपर पति पत्नी दोनों बेसब्री से बच्चों का इन्तजार करते हैं। लेकिन कोई नहीं आता। छोटी बेटी दीप्ति भी घर से अलग होकर छात्रावास में जाकर रहती है। दीप्ति सिगरेट पीती है। वह बालिग होने के बाद अपनी मर्जी से घर से जुदा होकर जीएगी। पति पत्नी ने बड़ी हिफाजत में कडी मेहनत करके

बच्चों की परवरीश की। लेकिन बड़े अफसोस की बात है सारा परिवार शीशे के समान बिखर गया। माता पितापर क्या गुजरेगी ? इसका किसी ने भी विचार नहीं किया। करूणा के पति के दिलपर गहरी चोट लगती है। वे खुदकुशी करने के लिए घर से निकल जाते हैं। पति महाशय घर से चले गये। न जाने शंका आशंका से उसका दिल धडकता है। वह मानो पागल बनती है। वह घबराकर अपने पति की तलाश करने के लिए सब को बुलाती है। लेकिन पिताजी की तलाश करने के लिए कोई नहीं जाता। हर इक को अपनी अपनी पड़ी है। करूणा का तो बुरा हाल हो जाता है। उसका दिल बेताब धडकता है वह घबराती है पति कहाँ होंगे ? पति कैसे होंगे ? न जाने शंका आशंका से उसका दिल चकनाचूर होता है। उसे चिंता अपनी नहीं चिंता पति की है। इससे पहले विवेक जब अपनी प्रियतमा जरीना के साथ विदेश यात्रा पर जाने निकलता है। बार बार समझाने पर भी वह चिकना घडा बनता है तो बेचारी टूटे हुए दिल से उससे कहती है, " (पूर्वत:) सिलन घूटन, बदबू, मुक्ति, यहीं कहते-कहते सभ चले गये। तू भी जा। तू भी मुक्ति पा। लेकिन-लेकिन मेरे भाग्य में मुक्ति नहीं लिखी है। मैं इस घर को छोडकर कहीं नहीं जा सकती। "[44] वह आदर्श पत्नी है। सारा परिवार शीशे के समान बिखर गया। लेकिन वह मरते दमतक अपने पति का साथ देना चाहती है क्योंकि वह एक आदर्श पत्नी है। पति के सुख में सुख और दु:ख में दु:ख मानकर हँसी खुशी से जीना चाहती है।

5) विमला (टगर) :

विमला " टगर " नाटक की गौण स्त्री पात्र है। विमला डॉक्टर की आदर्श पत्नी है। साथ ही साथ वह शकी एवं ईर्ष्यालु भी है। उसकी उमर 35 साल की है। उसे हर पल अपने पति का खयाल रहता है। वह भारतीय नारी है। पति को परमात्मा समझती है। टगर जब इस गाँव में आती है। स्वच्छंदी टगर को देखने के बाद उसके प्रति विमला के दिल में शंका पनपती है। टगर उसके डॉक्टर पति को अपने मोहजाल में फँसायेगी। टगर और ठाकूर साहब दोनों नाजिम साहब के बंगले में रहते हैं। वहा ताश खेलने के लिए पी.डब्ल्यू.डी. के सब डीविजनल के ऑफिसर माथुर साहब और विमला के पति डॉक्टर अक्सर जाते हैं। माथूर साहब तो टगर का रंग रूप देखकर पागल हुए है। वे टगर को पाने के लिए जब बिन मछली के समान तडफते हैं। टगर का रंग रूप, उसके बात करने की अनोखी अदा एवं नजर अन्दाज से डॉक्टर भी प्रभावित हुए है। यह सब देखकर विमला के दिल में यह शक पैदा होता है कि स्वच्छंदी टगर डॉक्टर को अपने चंगुल में फँसायेगी। विमला का घर संसार उजड जायेगा। टगर के इश्क में डॉक्टर भी दीवाने होते हैं। विमला टगर के घर जाकर अपने पति को लेकर घर आती है। उससे पहले पति को धमकाती भी है, " (एकदम बिगडकर) साफ क्यों नहीं कहतें कि मैं बुरी हूँ, टगर भली है। क्योंकि वह साँवली है। लेकिन सुन लो, मैं काली हूँ या गोरी, भली हो या बुरी, तुम मुझे छोड नहीं सकते। अब उठो और चलो। "[45] माथूर शादीशुदा है लेकिन बीबी उन्हें पसन्द नहीं थी। एक नर्स से माथूर प्यार करते हैं। उसका नाम कुसुम है।

उससे शादी करने का उन्होंने वादा किया था। लेकिन अब वे टगर के दिवाने हो गये। विमला कुसुम की चिठ्ठी लाकर माथूर को देती है और समझाती है लेकिन माथूर उसे गुस्से से कहते हैं, " (विमला पर क्रूर दृष्टि डालकर) डॉक्टरनी साहिबा, मेरे निजी मामलोंमें पडने का आप को कोई अधिकार नहीं है।

विमला : माथुर साहब ! पडोस के घर में जब आग लगती है तो अपना घर भी सुरक्षित नहीं रहता। (व्यंग्य से) मुझे आप लोगों के लक्षण भी बहुत शुभ नजर नहीं आते "[46] इस तरह वह माथूर को धमकाती है। वह अपने डॉक्टर पति को समझाती है। उसे अपने घर संसार की चिंता है। वह आदर्श पत्नी है।

6) गायत्री देवी (कुहासा और किरण) :

" कुहासा और किरण " नाटक में जो गायत्री देवी है वह आदर्श पत्नी एवं संवेदनशील नारी है। वह ममतामयी एवं स्नेहशील नारी है। लेकिन बड़े अफसोस की बात है कि एक भ्रष्टाचारी पति से उसका पाला पडा है। नेता कृष्णचैतन्य की वह पत्नी है। नेताजी एक नम्बर के भ्रष्टाचारी है। गायत्री देवी साहित्य प्रेमी भी है। लेखिका प्रभा जब उसे अपने नये उपन्यास की कहानी सुनाती है तो उसे खुशी होती है वह अपनी राय भी प्रभा को बताती है। मालती का हाल एवं दशा देखकर उसे दया आती है। जब गायत्री देवी को यह राज मालूम हो जाता है क मालती देशप्रेमी डॉ. चन्द्रशेखर की पत्नी है। वे कुल मिलाकर पाँच दोस्त थे। भारतमाता के लिये वे जेल गये। लेकिन नेता कृष्णचैतन्य अपने खुद्दार को बेचकर गद्दार बने। कृष्णचैतन्य मुखबिर बने। इसका असर यह हुआ कि शेष चार मित्रों की कड़ी से कड़ी सजाएँ हुयी। मालती के पति **तपोदिक** की बीमारी लेकर घर आये। अन्त में मर गये। यह राज होने के बाद गायत्री देवी यह फैसला करती है कि देशद्रोही, भ्रष्टाचारी पति के घर में वह एक पल भी नहीं ठहरेगी। उसके दिलपर गहरी चोट लग जाती है। वह ससुराल से जुदा होकर मायके जाती है। जाने से पहले वह अपने पति से कहती है, " मैंने कहा न अब कुछ भी कहने या करने से कोई लाभ नहीं। मुझे सोचने के लिए समय दो। मुझे तुमसे दूरी चाहिए। अन्धे को सत्य दिखाते-दिखाते स्वयं अन्धा होने की मेरी जरा भी इच्छा नहीं है। "[47]

वह चली जाती है। नेता कृष्णचैतन्य अपने जाल में अमूल्य को फँसाकर उसपर झूठा चोरी का इल्जाम लगाकर जेल भेजते हैं। क्योंकि अमूल्य के पिता जी उनके साथ जेल में थे। शायद अमूल्य उनकी गद्दारी एवं भ्रष्टाचार का भण्डा फोडेगा। अमूल्य जेल में खुदकुशी करने का प्रयास करता है। खबर मिलते ही गायत्री देवी जेल जाकर अमूल्य को देखती है वापस लौटते समय कार ॲक्सीडेंट में वह मर जाती है। लेकिन सच्चाई यह थी कि गायत्री देवी ने खुदकुशी की थी। पति की करतूत से उसकी नाक में दम आया था। कृष्णचैतन्य को उसका पत्र मिलता है। उनका भी मनपरिवर्तन होता है। उन्हें आत्मग्लानि होती है। वे अपने सारे अपराध कबुल करते हैं। टमटा साहब नेता, संपादक और अग्रवाल को गिरप-तार करते हैं। गायत्री देवी सचमुच आदर्श पत्नी थी।

7) रामकली (युगे युगे क्रान्ति) :

" युगे युगे क्रान्ति " नाटक में जो रामकली है वह इक आदर्श पत्नी है। पति को वह परमात्म समझती है। सन 1857 का जमाना है। उस जमाने में जाँति पाँति का बोलबाला था। छूत अछूत के बन्धन कड़े थे। रामकली के पति का नाम कल्याण सिंह है। सारा परिवार दबावग्रस्त है। इस जमाने में पति पत्नि दिन में एक दूजे से मिल नहीं पाते थे इतना ही नहीं तो पति अपनी पत्नी का मुखडा भी देख नहीं पाता था। कल्याण सिंह चुपके चुपके से रात के अंधेरे में अपनी पत्नी रामकली के पास जाता है। कमरे में रोशनी भी नहीं थी। शादी होकर बहुत दिन बीत गये थे लेकिन कल्याणसिंह अपनी रामकली का मुखडा देख न सका। वह अपनी पत्नि का मुखडा देखने के लिए जल बिन मछली के समान मचलता है एवं तडफता है। वह बेताब हो जाता है। रामकली तो शर्मो हया की पुतली बनकर अपने कमरे में बैठी थी। सारे परिवारपर बुजुर्गों का दबाव था। कल्याणसिंह रात के अंधेरे में पलंग से टकराता है। वह अपनी पत्नी से शिकायत करता है कि " " टकराऊँ न तो क्या हो ? कितना अंधेरा है। मैं कुछ भी तो नहीं देख सकता। क्या तुम इतना भी नहीं कर सकती कि एक अच्छा सा तेज रोशनीवाला दिया जला लो ?

रामकली : तेज रोशनी करके क्या मुझे जग-हँसाई करानी है। मैं क्या कोई कोठीवाली हूँ ? "[48] क्योंकि कुलीन खानदान के वे थे। कुलीन खानदान में पति पत्नि दिन में मिल नहीं पाते। रात के अन्धेरे में कमरे में दिया भी जला न सकते थे। इतना दबाव बुर्जुगों का रहता। इस परम्परा रीत रीवाज से दोनों परेशान होते है। उलझन को सुलझाने के लिए वह कहती है, " मुझे ही बच्ची का बकरा बनानेपर तुले हुए हो। बात सुनते ही नहीं, सुनो कुल तुम जरा देर से उपर आना। मैं तब तक नीचे चलने के लिए उतर पहूँची और उस वक्त जीने में हम दोनों एक दूसरे से टकरा जायेंगे। "[49] वह व्यवहार कुशल साहसी, आदर्श पत्नी है। बुद्धिमानी पत्नी ने उलझन को पल दो पल में सुलझाया। ऐसी पत्नी पाकर वह निहाल हो गया। कल्यागसिंह ने पत्नी का मुखडा देखने के लिए साहस किया लेकिन उसे अपने पिताजी के हाथों पीटना पड़ा था। पिताजी का कहना था कि कल्याणसिंह भ्रष्ट साधु के चन्गुल में फँसकर देश और धर्म को बरबाद करने पर तुला है। वह नास्तिक हो गया है। इसी बात को लेकर सारी गली में हाहाकार मच गया। रामकली जो शर्मो हया की पुतली थी उसने अपने पति की अरमान पूरी करने के लिए कुलीन खानदान की खोकली रीती परंपरा को मिट्टी में मिलायी। वह साहसी बनी। एक आदर्श पत्नी और साहसी एवं व्यवहारकुशल नारी के रूप में वह चित्रीत हुयी है।

आ) आदर्श देशप्रेमी नारीपात्र

विष्णु प्रभाकर जी भारत के सुपुत्र लेखक है। उनके नाटकों में उनकी राष्ट्रीय भावना सुन्दर शब्दों में अभिव्यक्त हुयी है। नारी पात्रों के चरित्र चित्रण में उन्होंने आदर्श देशप्रेमी नारीपात्रों को चित्रीत किया है।

1) आनन्दी (गान्धार की भिक्षुणी) :

" गान्धार की भिक्षुणी " नाटक की आनन्दी प्रमुख नारी पात्र है। वह देशप्रेमी, प्रेमिका, कुँआरी माता, शहीद नारी के रूप में इसे डॉ. विष्णु प्रभाकर ने चित्रीत किया है। यह देशप्रेमी नारी है। देशभक्ति की भावना उसमें कूटकूट से भरी है। वह जिन्दादिल नारी है। वह हमेशा खतरों से खेलती है। उसके पास अदम्य साहस एवं अखण्ड आत्मविश्वास है। वह मालव देश की जवान हँसीन नारी है। हूणों ने मालव देश पर मनमाने अत्याचार किये। उन्होंने सुन्दर मालव देश को मानों स्मशान बनाया। हूणों ने रात के अन्धेरे में नहीं तो दिल के उजाले में भी उन्होंने औरतों की इज्जते लूटी। बडे अफसोस की बात यह मालव देश का राजा परिप्राजक नपुंसक एवं कायर है। सब देखकर आनन्दी के तनबदन में आग ही आग लगी है। हूणों से उसे बदला लेना है। इन्तकाम की आग में वह जलती है। वीरांगना की भाँति वह गरज उठती है, " मालव नागरिकों ! हमें बहुत खुशी है कि आप लोग अपने देश को प्यार करते हैं। आपका यह सुन्दर प्रदेश, यमुना, नर्मदा, सरस्वती और क्षिप्रा जैसी पवित्र नदियों से सिंचित है। सहस्त्रार्जुन और परशुराम जैसे महावीरों की क्रिडा-भूमि रहा है यह प्रदेश। इसी प्रदेश में कालिदास की कालजयी कविता ने जन्म लिया। यही उदयन और वासवदत्ता की प्रणय कथा पनपी और यहीं पर उत्पन्न हुआ वह महावीर जिसने शकों का बीज रोप करके शकारी की उपाधि पायी। (अल्पविराम) आज फिर आपके सामने वहीं स्थिति पैदा हो गयी है जो छः सौ वर्ष पूर्व उस मालव-वीर के सामने पैदा हो गयी थी। उस समय इस प्रदेश को शकोंने अपने पैरों से रोद डाला था। आज हूण उसे रौंद रहे हैं। पर उस समय वह महावीर जरा भी नहीं परेशान हुआ था। क्यों नहीं हुआ था ? क्योंकि मालव जनता उसके मानी अपने स्वामी के साथ थी। "[50] उसकी ओज भरी वाणी से मालव नागरिक प्रभावित होते हैं। उसकी हाँ में हाँ मिलाते हैं। वह जहाँबाज नारी है। सैनिकी लिबास पहनकर जंग करती है। वह साक्षात रणचण्डी नारी है। अपनी ओजभरी वाणी से मालव वासीयों के दिल में मालव देश के प्रति मर मिटने की लालसा जगाती है। मिहिरकुल का घाव अपनी छातीपर झेलकर अपने प्रेमी को बचाती है। इसतरह अपने देश की आजादी के लिए वह शहीद होती है। वह देशप्रेमी नारी है।

2) मालवी (गान्धार की भिक्षुणी) :

" गान्धार की भिक्षुणी " नाटक में जो मालवी है वह इस नाटक की गौण स्त्री पात्र है। वह

देशप्रेमी, रणचण्डी साकी के रूप में चित्रीत हुयी है। वह सुन्दर एवं जवाँन है। वह देशप्रेमी नारी है। उसके सरपर टोपी, बदनपर कंचुकी है और फेटा कसा है। जिसमें कटार बंधी हुयी है। वह आनन्दी की सहेली है। आनन्दी और मालवी दोनों आजादी की दीवानी है। देशभक्ति का गीत गाकर दोनों जनता के दिल में देशभक्ति की भावना को जगाती है। हूणों से टक्कर लेने के लिए मालव वासियों को उकसाती है। सैनिकी लिवास पहनकर देशभक्ति के गीत गाती है। वह मालव सेनापति मारूत की बेटी है। मालवा का परिप्राजक कायर एवं नपुंसक है। हूण सरदार ने उसे कठपुतली बनाया है। मालवी के पिता ने जब परिप्राजक महाराज का विरोध किया तो हूणों ने सेनापति मारूत को सूलीपर लटकाया। मालवी के नस नस में देशभक्ति की भावना बहती है। हूण सरदार एवं उसके सैनिकों ने मालव वासियोंपर अत्याचार किये। दिल दहाडे औरतों की इज्जते लूटी। मालवी अपनी माँ के साथ खण्डहर के पीछे एक भग्न मन्दिर में रहती है। देशप्रेमी पिता की वह लाडली बेटी है। हूण सरदार और हूण सैनिकोंने मालव देश का बुरा हाल किया। उन्होंने मालव वासियोंपर मनमाने अत्याचार किये मालवी के दिल में उनसे बदला लेने की भावना भडक उठी है। वह यशोधर्मन से कहती है " मालव वीर ! मालवा आज वह नहीं रहा है जो साल भर पहले था। हूणों के बढ़ते अत्याचारों ने यहाँ के निवासियों को सचेत कर दिया है। धूल की तरह उन बर्बरों को अन्धा करने के लिए उठ खड़े हुए है वे, उनका क्रोध नपुंसक का क्रोध नहीं रह गया है। वह उबल उठने को आतुर है।"[51] वह अपने देश की आजादी के लिए साक्षात रणचण्डी बनी है। जब तक उसके जिस्म में आँखरी साँस बाकी है तब तक वह अपने देश के लिए कुर्बान होना चाहती है। उसे पूरा विश्वास है यशोधर्मन मालव देश को आजाद करेंगे। वह माँ से कहती है, " वही होगा माँ ! महावीर यशोधर्मन दूसरे स्कंदगुप्त बनेंगे और भोरंतरियों का क्रुद्ध कौशल राजकुमार कीर्तिवर्मा के रूप में प्रगट होगा।

माँ : (मुस्कुराकर) और तू क्या बनेगी ?

मालवी : (आवेश में) मैं बनूँगी महाकाली, बर्बर हुणों की शक्ति छील करनेवाली रणचण्डी ! "[52] वह देशप्रेमी हूणों से टकराना चाहती है। वह महाकाली एवं रणचण्डी बनकर हूण रूपी राक्षसों का संहार करने के लिए बेताब है।

3) शाहजादी (गान्धार की भिक्षुणी) :

" गान्धार की भिक्षुणी " नाटक की शाहजादी-यह गौण पात्र है। देशप्रेमी के रूप में उसे यहाँ चित्रीत किया है।

शाहजादी हूण सम्राट मिहिरकुल की लाडली बेटी है। मालव देश के परिप्राजक महाराज कायर डरपोक एवं नपुंसक है। हूणों ने मालव वासियों पर सितमगर बनके सितम ढाए। औरतों की अस्मतें लूटी। हूण

सरदार ने आनन्दी पर बलात्कार किया। मौका मिलते ही आनन्दी ने हूण सरदार का खून किया। राजा यशोधर्मन को बचाने के लिए आनंदी आपनी जान की कुर्बानी देती है। मिहीरकुल का बर्ताव शाहजादी को पसन्द नहीं था। मिहिरकुल " जान बची लाखों पाए " समझकर मालवा से रफूचक्कर होता है। शाहजादी ने पिताजी की भागने में मदद की थी। कीर्तिवर्मा जब शाहजादी को बन्दी बनाकर राजा यशोधर्मन के सामने पेश करता है तब उसने जो अपराध किया उसकी जो भी सजा मिलेगी उसे भुगतने के लिए वह तैयार हो जाती है। वह साहसी नारी है। मौत से नहीं ठरती। वह आसीम सभ्यता एवं संस्कृति को दिलोजान से चाहती है। वह चाहती है कि उसके पिताजी शहंशाह तोरमाण की नीति को अपनाये। हूण भारत में रहे तो आर्यों के दोस्त बनकर। हाकीम बनकर नहीं तो भारत की रयत बनकर। राजा यशोधर्मन जब उससे पूछता है, " पर तुम अपने पिता के साथ लौट सकती थी ?

शहाजादी : कहाँ लौटती ? क्यों लौटती ? मेरा वतन तो भारत है मैं अपने वतन को प्यार करती है। मैं यहाँ रहूँगी। "[53]

उसके जिस्म में जब तक आँखरी साँस बाकी है तब तक वह भारत को नहीं छोड़ेंगी। उसने अपने पिताजी को छोडा लेकिन मादरे वतन को नहीं छोडा।

4) अम्मुकुट्टी (केरल का क्रान्तिकारी) :

अम्मुकुट्टी एक जवाँन सुन्दर नारी है। वह देशप्रेमी नारी है। देशभक्ति की भावना उसमें कूटकूट के भरी है। उसे अपने देश की आजादी दिलोजान से प्यारी है। फिरंगी उसके देश को गुलाम बनाना चाहते हैं। वेनुतम्पी दलवा केरल का क्रांतिकारी है। अम्मुकुट्टी उससे बेहद प्यार करती है। वेनुतम्पी दलवा उसे अपनी चेतना मानता है। दलवा का आदेश सर आँखोंपर मानकर वह अपनी ओजभरी वाणी से सारे देश में क्रांति का अलख जगाती है। युद्ध के लिए लोगों को भड़काती है। फिरंगीयों से टक्कर लेने के लिये लोगों का हौसला बढ़ाती है। वह अपने प्यारे वतन एवं देश के लिए जान हथेलीपर फिरंगीयों से जंग शुरू है। वेनुतम्पी दलवा नायक बने हैं। उस वक्त अम्मुकुट्टी सैनिकों का मनोबल एवं साहस बढ़ाती है वह जोश में आकर सैनिकों से कहती है, " मैं जानती हूँ हमें तोपों का सामना करना पड़ रहा है। मैं यह भी जानती हूँ कि हमारे कप्तान बहुत योग्य नहीं है। जो योग्य है वह शहीद हो गये। फिर भी हमें युद्ध जीतना है और हम जीतेंगे। हम अपनी मातृभूमि को गुलाम नहीं होने देंगे। हम प्राण देंगे पर गुलामी का पट्टा गले में नहीं डालेंगे। हमारा प्यारा दलवा हमारे साथ है। वह सेना का संचालन करते हैं। घूम फिरकर जनता का उत्साह बढ़ाते है किसलिए ? इसलिए न कि वे फिरंगी हमारी प्यारी मातृभूमि को कलंकित न कर सके। हमारे नारिकेल और केलों के कुंज उनकी शरणगाह न बने। हमारे समुद्र की नाचती भिरकती लहरें उनके चरण न

धोये। (अल्पविराम) ठीक है, कोच्ची में हमारी हुई। रेजीडेण्ट निकल भागने में सफल हो गया। यह भी ठीक है कि कोल्लम में हम पराजित हुए। युद्ध में जीत या पराजय के अतिरिक्त और क्या हो सकता है ? इसलिये हम निराश क्यों हो ? आज पराजित हुए तो कल जीतेंगे भी।

ऐसी ओजभरी वाणी से लोगों में क्रांति का अलख जगाती है। लोगों का हौसला बढ़ाती है। देशभक्ति के गीत गाती है। उसके गले में जादू है। मानो वह आसमाँ पर लिखना चाहती है " इन्कलाब जिन्दाबाद " उसकी ओजभरी वाणी से सारे प्रभावित होते हैं। वह साक्षात रणचण्डी बनी है। वह देशप्रेमी नारी है। यह अबला नहीं तो सबला बनी है।

5.) धाय माँ (केरल का क्रान्तिकारी) :

" केरल का क्रान्तिकारी " नाटक की " धाय माँ " गौण नारी पात्र है। वह देशप्रेमी एवं ममतामयी नारी के रूप में चित्रीत की गयी है। दल्वा के प्रति उसके दिल में ममता पनपती है। दलवा के माता पिता बचपन में ही चल बसे थे। तो धाय माँ ने बड़ी हिफाजत से उसकी परवरीश की थी। उसे हर पर दलवा की चिन्ता लगी रहती है। फिरंगीयों की आँख में दलवा काँटो की तरह चुभने लगा। उन्होंने एक टेढी चाल चली। उनका कहना था कि अगर दलवा दीवान के पद का त्याग कर के मलाबार में बस जाये तो फिरंगी उसे पाँच सौ रूपये पेन्शन देंगे। लेकिन देशप्रेमी दलवा फिरंगीयों से टकराना चाहता है। धाय माँ दलवा के पास आकर कहती है, " तुम्हारे मित्र मैकाले ने जासूसों का जाल बिछा रखा है। वे सब हमारे ही लोग है। मान्तु तुरकन के संगी साथी।

वेनुतम्पी : जानता है।

धाय माँ : लेकिन क्या तुमने भी उनके दल में अपने आदमी छोडे है ?

वेनुतम्पी : प्रयत्न तो किया है।

धाय माँ : प्रयत्न नहीं, जाल बिछाना होगा। कालीकट में कोच्ची में और दावटर्बन में भी। मैं जानती हूँ कि सामूतिरी तुम्हारा साथ नहीं देगा। कोई साथ नहीं देगा सिवाय उसके जिसका अपना कोई स्वार्थ है। "[55]

वह व्यवहारकुशल नारी है। उसे अपने देश की आजादी दिलोजान से प्यारी है। वह अम्मुकुट्टी के साथ घूम फिरकर सारे देश में क्रांति का अलख जगाती है। फिरंगीयों से टकराने के लिए क्रांति का शोला लोगों के दिल में भडकाती है। बूढ़ी होकर भी नयी उमंग एवं जोश से काम करती है। उसे पूरा यकीन है औलादो दलवा की फिरंगीयों से मुक्ति दिला सकता है। वह आशावादी नारी है। फिरंगीयों से जब जंग होती है दलवा की हार हो जाती है। तब धाय माँ दलवा का हौसला बढ़ाती है। धाय माँ देवी भडकाली से दूवा

माँगती है कि वे उसके बच्चों की रक्षा करें " जहाँ आत्मसमर्पण ऐसा सम्पूर्ण हो, जहाँ संकल्प इतना विराट हो, वहाँ दुर्दिन की छाया कैसे पड सकती है, माँ, भडकाली अपने बच्चों को मैं तुम्हें सौंपती हूँ। जानती हूँ, दुर्दिन छाया भी तो वह नाश के लिए नहीं, नयी प्रेरणा देने के लिए ही आयेगा। "[56] उसे पूरा विश्वास है दलवा कामयाब होगा। नया युग आयेगा।

6) शारदा (युगे युगे क्रान्ति) :

" युगे युगे क्रान्ति " नाटक की शारदा जवाँन और सुन्दर लडकी है। वह प्यारेलाल की लाडली बेटी है। उसके पिताजी ने मतलब प्यारेलाल ने माता पिताने समझाया लेकिन उसने कुलीन परिवार की रीति परम्परा को मिट्टी में मिला के लाला सगुणचंद की विधवा बेटी कलावती से शादी की। शारदा प्यारेलाल और कलावती की लाडली बेटी है। माता पिता ने बड़ी हिफाजत से उसकी परवरीश की। उस जमाने में लडकी घर से बाहर नहीं निकलती। अगर निकली तो फिर भी उसके सरपर हमेशा पट्टा रहना। नहीं तो लोग ताना मारते। बदनामी होगी। एक दिन भरे बाजार की बस्ती से शारदा गुजर रही थी। सर से पट्टा गिर गया था। यह देखकर पिताजी घुस्से की तैश में आये। उन्होंने उसके गालपर थप्पड मारा। उसवक्त शारदा का मन परिवर्तन हो गया उसने फैसला किया की वह अब पुराने दाकियानूसी रीती रिवाजों का पालन नहीं करेगी। वह विद्रोही बनेगी। उस जमाने में स्वातंत्र्य संग्राम छिड गया था। शारदा देशप्रेमी युवती है। देशभक्ति की भावना उसमें कूटकूट के भरी थी। अपनी भारत माता को आजाद करने के लिए वह भी स्वातंत्र्य संग्राम में हिस्सा लेती है। वह सिर्फ पुरूषों की तरह भाषण नहीं देती तो रणचण्डी बनकर असहकार आन्दोलन में हिस्सा लेती है। उसका भाषण सुनकर नारियाँ प्रभावित होती है। पिकेटिंग करती है। साहसी बनती है। ब्रिटीश पुलिस उसे गिरप-तार करती है। गिरप-तार करने से पहले उससे सार्जेण्ट कहता है, " लेकिन मैं फिर आप से कहता हूँ कि आप चली जाएँ। आप स्त्रियाँ है आपको घरो में रहना चाहिए।

शारदा : आपकी सलाह के लिए धन्यवाद। लेकिन हम अब समझ गयी है कि यह सलाह गलत है। स्त्रियाँ घरों में रहने के लिए नहीं होती। वे दिन अब बदल गय। तुम नहीं जानते कि आदि शक्ति, महाचण्डी, महामाया, महाकाली ये सभी स्त्रियाँ थी। इसलिए हम अब घर नहीं जाएँगी। विदेशी कपडों की होली जलाकर दासता रूपी दानव का संहार करेगी। "[57] आखिर पुलिस उसे गिरप-तार करती है। अपनी प्यारी भारत माता के लिए मादरे वतन के लिए वह जेल जाती है। वह देशप्रेमी नारी है। यह देखकर प्यारेलाल आग बबूला होता है। अब वह उसे अपने घर में नहीं आने देगा। शारदा देशप्रेमी युवक विमल से प्यार करती है। विमल के पिता तो शारदा को झाँसी की रानी कहते हैं। वे उसे अपनी बहू बनाना चाहते हैं। वे दोनों को शादी के एकसूत्र में बाँधकर आजादी की लड़ाई में भाग लेने के लिए बड़ी खुशी से इजाजत देते हैं। शारदा

साहसी विद्रोही जिन्दादिल एवं देशप्रेमी नारी है।

इ) आदर्श कलाकार नारी पात्र :

विष्णु प्रभाकरजी ने अपने नाटकों के नारी पात्र के चरित्र चित्रण में कलाकारों को भी महत्त्व दिया है। यद्यपि यह चित्रण संख्या की दृष्टि से बहुत कम है तथापि कला के आदर्शवादी रूप को रूपायित करने में विशेष महत्त्वपूर्ण है। विष्णु प्रभाकर जी ने मुख्यतया आदर्शवाद के परिप्रेक्ष्य में संगीतकार एवं गायिका नारी को ही चित्रीत किया है।

1) शान्ता (अब और नहीं) :

" अब और नहीं " सामाजिक नाटक की शान्ता प्रमुख नारी पात्र है। वह आदर्श, माता ममतामयी, कलाविज्ञ नारी है। आज उसकी उमर 52-53 साल की है। 34 साल पहले उसकी शादी वीरेन्द्र प्रताप से हुयी थी। शादी से पहले वह जवाँन हसमुँख एवं कलाविज्ञ लडकी थी। माता पिता ने बड़ी हिफाजत से उसकी परवरीश की थी। उसके पिता का नाम वंशीधर और माँ का नाम सरला था। उसके पिताजी सरकारी अफसर थे। शान्ता एक कलाकारा थी। उसे संगीत का बेहद शौक था। वह ऐसे सितार बजाती कि सुननेवाले मंत्रमुग्ध होते। सितार को वह दिलोजान से चाहती है। सितार से जुदा होना उसके बस की बात नहीं थी। सितार पर उसकी उँगलियाँ ऐसी भिरकती कि देखनेवालों का ताज्जुब होता है। उसे पेंटिंग्ज का भी बेहद शौक था। हाथ में ब्रश लेकर हुबहू चित्र कागज पे उतारना उसके लिए दाए नहीं तो बाए हाथ का खेल है। वह ऐसा खाना बनाती है कि खानेवाले बड़ी चाव से खाते हैं। एक साथ वह संगीत, कलाविज्ञ, पेंटर एवं कलापूर्ण युवती थी। कुँवारे वीरेंद्र प्रताप जब उसे देखने के लिए अपनी माँ के साथ आया था। शान्ता का रंग रूप देखकर वह फुले नहीं समाया। शान्ता की माँ अपनी बेटी की तारीफ करते हुए कहती है, " (कृतज्ञ) सब अकेले शान्ता बेटी ने बनाये हैं। बहुत शौक है उसे तरह तरह की चीजे बनाने का। अभी भी कुकरी की क्लास में जाती है।

वंशीधर : कुकरी ही क्यों, संगीत का कितना शौक है उसे। अभी सुनिये उसका सितार वादन और पेंटिग ! अन्दर जो चित्र आपने देखे थे वे सब उसी के तो है। उसकी आवाज भी सुरीली है। "[58] इसतरह शान्ता एक कलाविज्ञ नारी थी। ऐसी लाखों में एक शान्ता को पत्नि के रूप में पाकर वीरेन्द्र प्रताप के आरमानों की झोली भर गयी। शादी के बाद भी वह सितार साथ लेकर ससुराल आयी थी।

2) शुभ्रा (अब और नहीं) :

शुभ्रा " अब और नहीं " नाटक की गौण पात्र है। सुशील सुन्दर युवती है। गृहस्वामी वीरेन्द्र प्रताप और शान्ता की वह लाडली बेटी है। उसकी उमर 22-23 साल है। उसकी अभी अभी शादी हुयी है।

उसे संगीत का बेहद शौक है। वह अपनी माँ की तरह बड़ी कुशलता से सितार बजाती है। शादी से पहले बहू बेटी शादी के बाद वह बहू रानी बनती है। आँखों में सुनहरे संसार के सपने लिये ससुराल जाती है। वहाँ से वापस आने के बाद शान्ता माँ उसे बड़े प्यार से पूछती है कि " (अनसूना करके) तू अपना सितार क्यों नहीं ले गयी अपने साथ ? यहाँ गोदाम में किसने रखा ?

शुभ्रा : (माँ को देखकर) मैं ही रख गया थी।

शान्ता : क्यों ?

शुभ्रा : क्योंकि (लजाकर) अब तुम्हें क्या बताऊँ। फुरसत कहाँ मिलती है इन दिनों। लोगों का आना-जाना। आज इस पार्टी में जाना है कल उस भोज में। बाहर भी बार बार जातें हीं रहते हैं। उन्हें बहुत शौक है घूमने का। घूमना मुझे भी अच्छा लगता है। "[59] उसके पति उसे अपने दिल की धडकन समझते हैं। शुभ्रा संगीत प्रेमी है लेकिन पति महाशन का कहना है कि सारी जिन्दगी पड़ी है सितार बजाने के लिए। समय नहीं इसलिए वह अपना सितार मायके के गोदाम में रखकर गयी थी। देखा जाय तो वह कलाकार नारी है।

3) शुभ्रा नं 2 (अब और नहीं) :

शुभ्रा नं 2 " अब और नहीं " नाटक की गौण स्त्री पात्र है। उसकी उमर 18-19 साल की है। वह किशोरी है। वह संगीत विद्यालय में पढ़ती है। वह सितार भी बजाती है। मानसिक रोगिनी शान्ता मुक्ति पाने के लिये घर छोडकर निकलती है। शान्ता जब बड़ी खुशी से संगीत विद्यालय के पास से गुजरती है तो उसका लिवास देखकर उसे शुभ्रा नं 2 और संगीत विद्यालय के विद्यार्थी पागल समझते हैं। शुभ्रा के हाथ में सितार देखकर शान्ता रूकती है। उसका सितार हाथ में लेकर बड़ी कुशलता से शान्ता ऐसा सितार बजाती है कि सुननेवाले दाँतो तले उँगली दबाते हैं। तमसा नदी के बारे में शान्ता जब उससे पूछती है तो वह बताती है तम्सा नदी तो वह जानती नहीं। हाँ हो सकता है वह नदी बहुत दूर होती जिन पहाडों से तमसा निकली है उन पहाडों का रास्ता भी वह नहीं जानती। वहाँ का मार्ग दुर्गम है। शान्ता वहाँ से चली जाती है। शुभ्रा नं 2 को पूरा यकीन होता है कि, " शायद पर ... मुझे तो लगता है इन्होंने कहीं न कहीं गहरी चोट खायी है। देखा नहीं उनकी आँखों को। "[60] शान्ता के दिलपर गहरी चोट लगी है यह राज शुभ्रा नं 2 जान जाती है। शान्ता की दशा देखकर वह भी दु:खी बन जाती है।

4) रेवा (नव-प्रभात) :

" नव-प्रभात " ऐतिहासिक नाटक में जो रेवा है वह एक संवेदनशील, करूणामयी एवं ममतामयी गायिका के रूप में चित्रित हुयी है। रेवा एक जवाँन सुन्दरी है। उसे अपने तनबदन का अभी होश हवास नहीं है। वह रंजूर एवं गमों से चूर है। इसकी वजह यह है कि सम्राट अशोक ने कलिंग देशपर कब्जा किया। घमासन युद्ध हुआ। हजारों आदमी जख्मी एवं घायल हुए। हजारों आदमी कत्ल हुए। खून की नदी बहती है।

चारों ओर हाहाकार मच गया है। यह सारा महानाश एवं उसकी लीला देखकर रेवा के दिलपर गहरी चोट लगी है। स्वर्ग सा सुन्दर देश कलिंग मानों स्मशान बन गया है। उसके जिगर में इक नासूर पैदा हो गया है। चारों ओर मातम छाया है। वह अपनी दर्दभरी आवाज में महानाश की लीला का ब्योरा गीत के जरिए पेश करती है। युद्ध का संजाम क्या हुआ यह बयान करती है। उसकी आवाज में टीस एवं वेदना है। उसके हाथ में वीणा है। जंग ए मैदान में वह घुमती है। दूर रक्तिम क्षितिज को देखती हुयी वह करूण विषाद स्वर में गा रही है। उसकी कोमल और लम्बी उँगलियाँ जब वीणा के तार को झनझनाती है तो मानो प्रलय चीत्कार कर उठती है। गीत ऐसा है मानो हन्सानियत एवं मानवता सिसक रही है।

" माँ तेरे आंगन में जलती महानाश की ज्वाला।
अस्ताचल पर रक्तिम लपटें लप-लप लपक रही हैं।
चिता, धूम के बादल बखेरे उतर रहा तम काला।
में सडते **शव**, जलते खण्डहर, रक्तिम होती रहे। .... "[61]

गाते गाते वह इतनी तन्मय हो जाती है कि आत्मविभोर हो उठती है कि वह अपनी सुध बुध खोती है। गीत के माध्यम से जंग के असर से कलिंग देश का हाल एवं जंग-ऐ-मैदान की दशा वह बयान करती है। गीत गाकर वह सम्राट अशोक की रानी कारूवाकी का दिल बहलाने का प्रयास करती है तो दर्दभरा गीत सुनकर रानी कारूवाकी भी दु:खी होती है। उसकी कानों में यह गीत मिश्री नहीं तो जहर घोलता है। वह यह गीत सुनना नहीं चाहती। जंगे मैदान में से रेवा वीणा बजाते हुए दर्दभरी आवाज में गीत गाती है तो ऐसा लगता है साक्षात करूणा गा रही है। सम्राट अशोक उसके बारे में संघमित्रा से कहते है " संघमित्रा जब रेवा गाती है, तो न जाने क्यों मुझे युद्ध भूमि का दृश्य दिखाई देने लगता है। मैं जब उसके मादक संगीत में घायलों का चित्कार सुनने लगता हूँ। मेरे कानों में उस समय बंदियों की करूण पुकार गूँज उठती है। (उत्तेजीत हो जाती है) संघमित्रा ... संघमित्रा ! युद्ध में इतने आदमी क्यों मरते हैं क्यों है ? युद्ध होते क्यों है ? "

ई) आदर्श भिक्षुणी नारी पात्र

विष्णु प्रभाकर के ऐतिहासिक नाटकों में उन्होंने भिक्षुणी के आदर्श रूप को प्रस्तुत किया है। कलिंग युद्ध के बाद सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन होनेपर अशोक पत्नी कारूवाकी, बहन संघमित्रा और गायिका रेवा का भिक्षुणी बनना आदर्शवाद को प्रतिष्ठापित करता है। कलिंग की राजकुमारी भी भिक्षुणी बन के जंग-ए-मैदान में घायलों की दिलोजान से सेवा करती है। उसे सेविका नारी के रूप में नाटककार विष्णु प्रभाकर ने चित्रीत किया है।

1) कारूवाकी (नव-प्रभात) :

साम्राज्य विस्तार की लिप्सा की वजह से सम्राट अशोक ने कलिंग देशपर कब्जा किया। चारों ओर हाहाकार मच गया। महानाश की यह लीला देखकर कारूवाकी के दिलपर गहरी चोट लग गयी। संवेदन शील कारूवाकी मानों मुर्दादिल बन गयी वह रेवा से कहती है, " ठीक है रेवा, परन्तु कलिंग-विजय हो जाने से युद्ध बंद होने की कोई आशा नहीं है। अभी सिंहल विजय शेष है। फिर कलिंग तथा सिंहल के बीच में कितने ही और देश है। उनमें कितने ही लाख नर नारी बसते हैं। उन सब की हत्या ... उफ ! विधाता इस संसार को एक बार ही क्यों नहीं नष्ट कर देता। "[63]

युद्ध से वह भी दु:खी हुयी है। उसे युद्ध से नफरत होती है। अशोक जब कुमार को दी हुयी मृत्युदण्ड की आज्ञा वापस लेते हैं तो वह कहती है, " (जैसे अपने से बोलती है) मृत्युदण्ड की आज्ञा वापस ले ली। उसका राज्य उसे लौटा दिया ... । जिस राज्य के लिए लाखों मानवों का रक्त बहा, लाखों ललनाओं की सुहाग की लाली पूँछी, लाखों माताओं की गोद सूनी हो गयी। जिस राज्य के लिए नगर विशान हो गए, भवन खण्डहर बन गये, पृथ्वी और आकाश अनाथों, अपाहिजों, अनाहतों की आँहों से काँप उठे, वही राज्य अपने उसे लौटा दिया। इतना बड़ा मरण त्योहार मानकर, इतनी बडी दानवी लीला के बाद ... "[64]

अशोक का मनपरिवर्तन हुआ यह देखने के बाद उसे नाज्जुब होता है। उसकी मुलाकात भिक्षुणी मतलब कलिंग की राजकुमारी से होती है। वह भिक्षुणी अशोक से बदला लेना चाहती है। कलिंग का राजकुमार " कुमार " जब जेल में खुदकुशी करता है तब कारूवाकी के दिलपर गहरी चोट लग जाती है। वह बौद्ध धर्म की दीक्षा लेनी चाहती है। वह पति को यह राज बताती है कि संघमित्रा, भिक्षुणी और रेवा दीक्षा लेने का निश्चय किया है। वह अशोक को लेकर वहाँ जाती है और अशोक से कहती है, " और मैं भी। मेरा मन भी यह मंत्र गाने को करता है, गाओ स्वामी ! आप भी गाओ - बुद्धं सरणं गच्छामि, धम्मं सरणं गच्छामि, संघं सरणं गच्छामि। "[65]

बौद्ध धर्म की दीक्षा लेकर वह भी भिक्षुणी बनती है।

2) संघमित्रा (नव-प्रभात) :

संघमित्रा जवाँन सुन्दर नारी है। वह मगध देश के सम्राट अशोक की छोटी लाडली बहना है। सम्राट अशोक ने साम्राज्य विस्तार के लिए कलिंग देशपर कब्जा किया। घमासन युद्ध हुआ। सैनिकी लिवास पहनकर शूरवीर एवं साहसी नारी जंगे मैदान में से घुमती है। हजारों जख्मी हुए। अनगिनत घायल हुए सब तरफ चीत्कार एवं आक्रोश से हाहाकर मच गया। खून का दरिया बहता है। महानाश की लीला देखकर

दिलपर गहरी चोट लगी। स्वर्ग से सुन्दर कलिंग देश स्मशान बन गया। कलिंग के राजा देश के लिए शहीद हुए। कलिंग के राजकुमार " कुमार " को बन्दी बनाया गया। संघमित्रा कुमार से प्यार करती है। जब अशोक का मनपरिवर्तन होता है। अशोक उसे जीवन दान देना चाहता है लेकिन स्वाभिमानी कुमार दया की भीख नहीं माँगता। अंत में जेल में खुदकुशी करता है। संघमित्रा के दिलपर सदमा पहुँचा। उसके सुनहरी संसार के सारे सपने चकनाचूर हो गये। वह भिक्षुणी बनना चाहती है। कलिंग की राजकुमारी देवी संघमित्रा और गायिका रेवा भिक्षुणी बन ने जा रही है। मंत्र स्वर गाती है।

3) रेवा (नव-प्रभात) :

सम्राट अशोक ने कलिंग देशपर कब्जा किया। घमासन युद्ध हुआ। कलिंग देश के राजा अपने देश के लिए शहीद हुए। सम्राट अशोक ने कलिंग के राजकुमार को बन्दी बनाया। स्वर्ग सा सुन्दर कलिंग देश उजड़ गया। वह स्मशान बन गया। खून का दरिया बहने लगा। चारों ओर हाहाकार मच गया। वह आलाप विलाप सुनकर हिंसा का नर्तन देखकर रेवा के दिलपर गहरी चोट लगी। कलिंग का राजकुमार सम्राट अशोक की दया पर जीना नहीं चाहता। उसने जेल में खुदकुशी की। इसका असर यह होता है कि सम्राट अशोक का भी मनपरिवर्तन होता है। वह अहिंसावादी बनता है। वह अपनी रानी कारूवाकी के साथ बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने के लिए भिक्षु उपगुप्त के पास जाना चाहता है। इतने में स्वर उभरता है, -

" स्वर - बुद्धं सरणं गच्छामि, धम्मं सरणं गच्छामि, सघं सरणं गच्छामि। "[56]

इस स्वर से अशोक प्रभावित होता है। उसके दिल में यह जिज्ञासा पैदा होती है यह कौन गाता है तो कारूवाकी बताती है कि कलिंग की राजकुमारी, देवी संघमित्रा और रेवा " मतलब ये तीनों " भिक्षुणी बनने जा रही है। यह स्वर गाने की लालसा अशोक के दिल में पैदा होती है। वह भी बौद्ध धर्म की दीक्षा लेकर मरते दमतक अहिंसा का पालन दिलोजान से करना चाहता है। रेवा भी भिक्षुणी बन गयी।

4) भिक्षुणी (नव-प्रभात) :

(कलिंग की राजकुमारी)

यह जवाँन एवं सुन्दर नारी है। यह भिक्षुणी के वेश में कलिंग की राजकुमारी है। उसके नाक नक्श तीखे हैं। सुन्दरता में वह तो लाजबाब है। सम्राट अशोक ने कलिंग देशपर कब्जा किया। घमासन युद्ध हुआ। हजारों आदमी जख्मी एवं घायल हुए। हजारों अपने प्यारे वतन के लिए शहीद हुए। चारों ओर हाहाकार मच गया। मानो स्वर्ग सा सुन्दर कलिंग देश स्मशान बना। अपने देश के लिए कलिंग देश के राजा शहीद हुए। कलिंग के देश के राजकुमार " कुमार " को बन्दी बनाया गया। तो यह सब महानाश देखकर कलिंग देश की राजकुमारी के दिल में आग ही आग लग जाती है। उसे अशोक से प्रतिशोध लेना है। वह इसे

कातिल समझती है। बदलेकी आग में जलती है। अशोक के वध को ही वह अपनी जिन्दगी का मकसद समझती है। इसलिए चोरी चोरी से उसने गहरी चाल चली। अशोक तक पहुँचने के लिए वह भिक्षुणी बनी है। मौका आते ही वह अशोक का खून करना चाहती है। भिक्षुणी जंगे मैदान में से घुमती है। घायलों की सेवा करती है। उनका ईलाज करती है। जंगे ए मैदान में घुमनेवाली इस भिक्षुणी को देखकर सेनापति के दिल में शक पैदा होता है वे उसे बन्दी बनाकर अशोक के पास लाते हैं। (इससे पहले गुप्तचर बन्धुजीव ने आकर यह राज अशोक को बताया था कि भिक्षुणी के वेश में कलिंग की राजकुमारी है। वह साहसी है। अशोक के आमने सामने खड़े होकर बताती है, " (गंभीर होकर) हाँ सम्राट, आप मेरे पिता के हत्यारे है, आपने मेरे देश को उजाडा है। मैं भी आपकी हत्या करने का निश्चय करके घर से निकली थी। मैंने भी आपका नाश करने के लिए ये वस्त्र धारण किये थे पर ... पर ... पर ... "[67]

लेकिन बाद में उसका मनपरिवर्तन हुआ। उसने भिक्षुराज से प्रवज्या ली।

निष्कर्श :-

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि :-

(1) विष्णु प्रभाकर की अन्तरीत्मा आदर्शवादी होने से उनका नारी विषयक दृष्टिकोन भी आदर्शवादी रहा है।

(2) नारी के प्रति उनके मन में गहरी आस्था और श्रध्दा होने के कारण उनके नाटकों में आदर्शवादी नारी पात्र चित्रित हुए है।

(3) उनके नाटकों में आदर्शवादी नारी के विभिन्न रूप दृष्टिगोचर होते हैं जिनमें सर्वाधिक आदर्श माता, बेटी, बहू, बहन, प्रेमिका तथा पत्नी के रूप में उनके नाटकों के नारी पात्र पारिवारिक जीवन की महत्ता विशद करते है।

(4) आदर्श पारिवारिक नारी-पात्रों के व्यतिरिक्त उनके नाटकों में देशप्रेमी, कलाकार तथा भिक्षुणी नारी पात्र दिरवाई देते हैं।

(5) उनके आदर्श नारी पात्रों में मुख्यतया भारतीयता के सहज दर्शन होते हैं।

संदर्भ –

1. हिन्दी साहित्य में विविध वाद – डॉ.प्रेमनारायण शुक्ल पृ.79 द्वि.संस्क.1970
2 हिन्दी साहित्य कोश , भाग –1 प्र.संपा.डॉ.धीरेन्द्र वर्मा पृ.103 द्वि संस्क संवत् 2020
3. वही पृ. 105
4. साहित्यिक निबंध – राजनाथ शर्मा पृ. 396 सं.1965
5. शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दान्त (पहला भाग)–डॉ.गोविन्द त्रिगुणायत पृ.139 प्र.संस्क.1970
6. विष्णू प्रभाकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व –डॉ.राजलक्ष्मी नायडू पृ.63 प्र.सं.1991
7. वही पृ.105
8. विष्णू प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खंण्ड 4 – "डॉक्टर" –विष्णू प्रभाकर– पृ.200 प्र.सं.1989
9. विष्णु प्रभाकर के संम्पर्ण नाटक खण्ड 6 – "स्वेत कमल" –विष्णू प्रभाकर–पृ.56 प्र.सं.1989
10. विष्णु प्रभाकर के संम्पुर्ण नाटक खण्ड 4 – "ढगर" – विष्णु प्रभाकर–पृ.255 प्र.सं.1989
11. विष्णू प्रभाकर के संम्पुर्ण नाटक खण्ड 6 – "खेतकमल" – विष्णु प्रभाकर–पृ.23 प्र.सं.1989
12. वही वही पृ.24 प्र.सं.1989
13. विष्णु प्रभाकर सम्पुर्ण नाटक खण्ड 6 –गुहासा और किरण–विष्णु प्रभाकर पृ.155 प्र.सं.1989
14. विष्णु प्रभाकर सम्पुर्ण नाटक खण्ड 4 – "डॉक्टर " –विष्णु प्रभाकर पृ.177 प्र.सं.1989
15. विष्णु प्रभाकर सम्पुर्ण नाटक खण्ड 5 – "केरल का क्रान्तीकारी"–विष्णु प्रभाकर पृ.194 प्र.सं.1989
16. वही वही पृ.193 प्र.सं.1989
17. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड 6– "श्वेतकमल"– विष्णु प्रभाकर पृ.14 प्र.सं.1989
18. वही वही पृ.54 प्र.सं.1989
19. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड 5– "गान्धार की भिक्षुणी–विष्णु प्रभाकर–पृ.131 प्र.सं.1989
20. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड 4–"टुटते परिवेश"–विष्णु प्रभाकर पृ.206 प्र.सं.1989
21. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड 5–"अब और नही"–विष्णु प्रभाकर पृ.269 प्र.सं.1989
22. वही वही पृ.293 प्र.सं.1989
23. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड 6–"कुहसा और किरण–विष्णु प्रभाकर पृ.153 प्र.सं.1989
24. वही वही पृ.161–162 प्र.सं.1989
25. वही वही पृ.188 प्र.सं.1989
26. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड 4– टूटते परिवेश–विष्णु प्रभाकर पृ.235 प्र.सं.1989
27. वही युगे युगे...कोनी पृ.332–333 प्र.स.1989

28.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड–4	युगें युगें क्रान्ती	पृ.321 प्र.सं.1989
29.	वही	वही	पृ.332 प्र.सं.1989
30.	वही	"दरार"	पृ.277 प्र.सं.1989
31.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड–6	नन्दिनी	पृ.86 प्र.सं.1989
32.	वही	वही	पृ.98 प्र.सं.198 9
33.	वही	वही	पृ.99–100प्र.सं.1989
34.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड–4	"अब और नही"	पृ.257–258 प्र.स.1989
35.	वही	वही	पृ.260 प्र.सं.1989
36.	वही	"टूटते परिवेश"	पृ.232 प्र.सं.1989
37.	वही	वही	पृ.238प्र.सं.1989
38.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड –5	गान्धार की भिक्षुकी	पृ.120 प्र.सं.1989
39.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड–6	श्वेत कमल	पृ.29 प्र.सं.1989
40.	वही	वही	पृ.29 प्र.सं.1989